बाल भारती

1948 से लगातार प्रकाशित
सितम्बर 2025

शिक्षक दिवस की शुभकामनाएँ

- राष्ट्र निर्माण के आधार शिक्षाविद्

नेट्रोन लेक

यह अनोखी झील उत्तरी तंजानिया में स्थित है जिसे नेट्रोन लेक कहा जाता है फोटोग्राफर नीक ब्रान्डट ने तंजानिया के नेट्रोन लेक के बारे में सबसे पहले पता लगाया था। जब वह झील के करीब पहुंचे तो उन्हें वहाँ पर पशु-पक्षियों की पत्थर की मूर्तियाँ नजर आईं, सभी मूर्तियाँ असली मृत पक्षियों की थीं। दरअसल झील के पानी में एक ऐसा घातक तत्व है जिसके सम्पर्क में आकर जानवर और पशु-पक्षी कैल्सीफाइड होकर पत्थर बन जाते हैं। हालांकि नमक की अधिक मात्रा ही पक्षियों के मृत शरीर को सुरक्षित रख पाती है झील के पानी में एल्कलाइन का स्तर पीएच 9 से 10 के आसपास है जो भी झील के पानी को टच करेगा वह तुरंत ही पत्थर में बदल जाएगा। झील की जाँच करने पर पता चला झील में वही तत्व है जो ज्वालामुखी की राख में मौजूद होता है, हालांकि इसके पीछे के असली कारण अभी तक पता नहीं लगाया जा सका।

बाल भारती

बच्चों की सम्पूर्ण पत्रिका

वर्ष : 77 ■ अंक : 4 ■ पृष्ठ : 56 | भाद्रपद-आश्विन 1947 | सितम्बर 2025

लेख

[illegible]	[illegible]	6
विदेशों में [illegible] हिन्दी की [illegible]	डॉ. [illegible]	11
अंतिम [illegible] और उसके बाद	अमर [illegible] सिंह	13
शुद्ध उच्चारण और लेखन	डॉ. [illegible] मिश्र	18
[illegible]	[illegible]	20
[illegible]	[illegible]	24
[illegible]	[illegible]	30
[illegible]	[illegible]	32
[illegible]	[illegible]	33
[illegible]	[illegible]	34
[illegible]	डॉ. [illegible] मिश्र	35
[illegible]	[illegible] शर्मा	44
[illegible]	डॉ. [illegible]	46

कहानियाँ

[illegible]	डॉ. [illegible]	8
[illegible]	[illegible]	15
[illegible]	[illegible]	27
[illegible]	[illegible]	38
[illegible]	[illegible]	41

धारावाहिक उपन्यास - [illegible]

[illegible]	[illegible] सिंह	50

कविताएँ

[illegible]	[illegible]	40
हिन्दी	[illegible]	54

[illegible]

[illegible]	[illegible]	26
[illegible]	[illegible]	28-29
[illegible]	[illegible]	52-53

सम्पादक : [illegible]

दूरभाष : [illegible]

संयुक्त निदेशक (उत्पादन) : [illegible]

आवरण : [illegible] कुमार

चित्रांकन : [illegible]

[illegible]

[illegible]

सम्पादकीय पत्र व्यवहार का पता :

[illegible]

हिन्दी दिवस

हमारी बात

बच्चो, सितम्बर का महीना शिक्षक दिवस और हिन्दी दिवस के कारण विशेष होता है। जैसा कि आपको पता है 5 सितम्बर को डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्मदिवस के अवसर पर शिक्षक दिवस मनाया जाता है। शिक्षक दिवस केवल एक औपचारिकता नहीं बल्कि शिक्षकों को सम्मान देने का दिन है। क्योंकि शिक्षक छात्रों पर वर्ष भर अथक मेहनत करते हैं तो छात्रों द्वारा आभार प्रकट करना स्वाभिवक है। हमें इस दिन यह याद रखना है कि शिक्षक केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं बल्कि वह छात्रों को आत्मनिर्भर और ज्ञान का मार्ग दिखाते हैं। छात्र से समाज का पुनर्निर्माण और मार्गदर्शन शिक्षक ही कराते हैं। यह अभिनंदनीय है।

शिक्षक दिवस के साथ ही दोस्तो 1953 में 14 सितम्बर, 1949 को भारतीय संविधान सभा ने हिन्दी को देवनागरी लिपि में भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया। 1953 से हर वर्ष 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है। हिन्दी देश की एकता और संस्कृति धरोहर का प्रतीक है। हिन्दी दिवस मनाने का उद्देश्य उसका प्रचार-प्रसार करना और आप जैसे बच्चों से सम्मान प्राप्त करना है।

आप हमारे देश के भविष्य हैं और हमें उम्मीद है कि आप शिक्षक और हिन्दी को मन से सम्मानित कर देश की गौरव को बढ़ाएँगे।

आपकी बात

बाल भारती का जून अंक बहुत ही रोचक था। कठिन जैसे बहुत ही कठिन विषय को सरलता से प्रस्तुत किया गया। यह प्रशंसनीय है। इसके सभी ज्ञानवर्धक लेख और कहानी हमें लुभाते हैं। पत्रिका में बच्चों की रचनाओं को प्रकाशित करने की परम्परा है- जैसे कि बच्चों द्वारा भेजी गई कविताएँ, चित्र। इसके साथ-साथ पत्रिका में प्रत्येक माह 'चित्र बनाओ प्रतियोगिता' भी आयोजित की जाती है। जिसमें विजेता बच्चों को बाल भारती का वार्षिक सब्सक्रिप्शन और प्रतिभागी बच्चों को उस अंक की बाल भारती पत्रिका पुरस्कार में मिलती है। इससे बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ता है और वे खुद को एक लेखक, कलाकार और पुरस्कार विजेता के रूप में देख पाते हैं, जिससे उनका मनोबल बढ़ता है। आज के दौर के महत्वपूर्ण मुद्दे- जैसे जल संरक्षण, प्लास्टिक प्रदूषण, बाल अधिकार, डिजिटल सुरक्षा आदि- पर भी पत्रिका में लेख छपते हैं, जो बच्चों में सामाजिक चेतना पैदा करते हैं।

-मृदुल मिश्र, गाजीपुर, उत्तराखंड

बाल भारती पत्रिका मुझे बहुत पसंद है क्योंकि यह केवल मनोरंजक कहानियों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह नैतिक मूल्यों, देशभक्ति, पर्यावरण जागरूकता, विज्ञान और सामाजिक जानकारी जैसे विषयों को भी प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती है। इससे बच्चों में अच्छे संस्कार, विचार और सोचने-समझने की क्षमता का विकास होता है।

चित्रांकन पत्रिका की एक विशेषता है। रंगीन चित्र और आकर्षक डिज़ाइन बच्चों का ध्यान खींचते हैं। हर अंक की विषयवस्तु को कला के माध्यम से जीवंतता प्रदान की जाती है।

यह पत्रिका बच्चों को संस्कार, ज्ञान और नैतिकता की शिक्षा से मार्गदर्शित करती है। हर माता-पिता और शिक्षक को यह पत्रिका बच्चों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करनी चाहिए।

-[illegible], काशी

बचपन मानव जीवन का सबसे कोमल, जिज्ञासु और सीखने का सबसे महत्वपूर्ण चरण होता है। इस समय दी गई शिक्षा, संस्कार और जानकारी बच्चे के संपूर्ण व्यक्तित्व को आकार देती है। ऐसे में यदि बच्चों को रोचक और शिक्षाप्रद साहित्य उपलब्ध कराया जाए, तो वे खेल-खेल में बहुत कुछ सीख सकते हैं। इसी उद्देश्य को लेकर बाल भारती जैसी पत्रिका प्रकाशित की जाती है, जो बच्चों के लिए ज्ञान, मनोरंजन और नैतिक शिक्षा का अनोखा संगम है। यह बच्चों को ऐसी सामग्री प्रदान करता है जो न केवल उनके ज्ञान में वृद्धि करे, बल्कि उनकी रचनात्मकता, नैतिकता और सोचने की क्षमता को भी विकसित करता है। बाल भारती की भाषा अत्यंत सरल, सहज और बाल मनोविज्ञान के अनुरूप होती है। यह बच्चों को आसानी से समझ आती है और पढ़ने में रुचि पैदा करती है।

पत्रिका में रंगीन चित्र, शब्द खेल, चित्रकथा और चित्र बनाओ प्रतियोगिता भी शामिल होती हैं, जो बच्चों के लिए अत्यंत आकर्षक होती हैं और उनकी सृजनात्मकता तथा कल्पनाशक्ति को बढ़ाती है। बाल भारती केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि एक ऐसा माध्यम है जो बच्चों के सर्वांगीण विकास में मदद करता है। शिक्षक इसे सहायक शिक्षण सामग्री के रूप में उपयोग करते हैं। बच्चे भी इससे अपने अध्ययन में मदद लेते हैं इसके लिए, बाल भारती को धन्यवाद।

-अजीत मिश्र, पटना, बिहार

बाल भारती के पाठकों से निवेदन है कि पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के विषय में अपनी प्रतिक्रिया भेजें। आप हमें ई-मेल [illegible] पर भी अपनी प्रतिक्रिया भेज सकते हैं। लेखकों से निवेदन है कि वे रचना के साथ रचना की मौलिकता का प्रमाणपत्र, अपना पता, ई-मेल, मोबाइल नंबर, पासपोर्ट साइज फोटो, पिन कोड अवश्य भेजें। रचना की स्वीकृति होने तक [illegible]। अस्वीकृत रचनाएँ लौटाई नहीं जातीं।

राष्ट्र निर्माण के आधार शिक्षाविद्

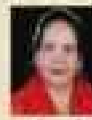

रजनी अरोड़ा
स्वतंत्र लेखिका

शिक्षक हम सभी के जीवन को बेहतर बनाने में अहम भूमिका निभाते हैं। वे छात्रों को गढ़ कर सफलता के शीर्ष तक पहुँचने में सहायक होते हैं और राष्ट्र के निर्माण में अहम भूमिका निभाते हैं। हमारे देश में डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, रवीन्द्रनाथ टैगोर जैसे कई शिक्षक हुए हैं जिन्होंने अध्यापन-क्षेत्र के साथ राष्ट्र निर्माण में मिसाल कायम की। शिक्षकों के सम्मान में हमारे देश में हर वर्ष 5 सितम्बर का दिन शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्मदिवस है। जबकि यूनेस्को ने 5 अक्तूबर को वर्ल्ड टीचर्स डे घोषित किया था। जिसके तहत मालदीव, कुवैत, मॉरीशस, ब्रिटेन, रूस जैसे देश 5 अक्तूबर को टीचर्स डे मनाते हैं। आइए 5 सितम्बर के इस मौके पर ऐसे ही कुछ शिक्षाविदों के बारे में जानें- जिन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान किया।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन

देश के पहले उपराष्ट्रपति और दूसरे राष्ट्रपति रहे डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन महान शिक्षाविद थे। उन्हें 1954 में स्वतंत्रता सेनानी सी राजगोपालाचारी और भौतिकशास्त्री डॉ. सी.वी. रमन के साथ सबसे पहले भारत रत्न से सम्मानित किया गया था। 5 सितम्बर, 1888 को जन्मे राधाकृष्णन के पिता की इच्छा थी कि उनका बेटा अंग्रेजी सीखे और शिक्षक बने। लेकिन राधाकृष्णन ने अपनी पसंद की पढ़ाई जारी रखी। उन्होंने फिलॉसफी में एम.ए. किया और वर्ष 1916 में मद्रास रेजिडेंसी कॉलेज में फिलॉसफी के असिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में पढ़ाना शुरू किया। कुछ साल बाद ही वे प्रोफेसर बन गए। 1949 से 1952 तक वे रूस में भारत के राजदूत पद पर भी रहे। वर्ष 1952 में उन्हें भारत का पहला उपराष्ट्रपति चुना गया और बाद में वे राष्ट्रपति बने। अध्यापक के रूप में सर्वपल्ली राधाकृष्णन छात्रों के बीच बहुत लोकप्रिय रहे। जब वे देश के राष्ट्रपति बने तो उनके कुछ छात्रों ने उनका जन्मदिन मनाने की इच्छा व्यक्त की। जबकि राधाकृष्णन ने उन्हें अपना जन्मदिन शिक्षक दिवस के रूप में मनाने की सलाह दी। उनका मानना था कि शिक्षक वह नहीं जो छात्र के दिमाग में तथ्यों को जबरन ठूंसे, बल्कि असल शिक्षक वह है जो उसे आने वाले कल की चुनौतियों के लिए तैयार करे। तभी से उन्हें सम्मान देने के उद्देश्य से भारत में उनके जन्मदिन को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है।

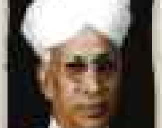

गोपाल कृष्ण गोखले

गोपाल कृष्ण गोखले एक महान समाज सुधारक और शिक्षाविद थे। उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को भी अभूतपूर्व नेतृत्व प्रदान किया। उनका मानना था कि भारतीयों को पहले शिक्षित होना जरूरी है, तभी नागरिक के तौर पर वे आजादी हासिल कर पाएंगे। इसी वजह से स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने से पहले उन्होंने बतौर शिक्षक अपना जीवनयापन किया। वे पुणे के फर्ग्युसन कॉलेज के संस्थापक सदस्यों में से एक थे। बचपन में शिक्षा प्राप्त करने में उन्हें अनेक कठिनाइयों

का सामना करना पड़ा था। जिसकी वजह से वे शिक्षा की अनिवार्यता और उसे निःशुल्क शिक्षा व्यवस्था पर जोर देते थे। भारतीय शिक्षा के विस्तार के लिए गोखले ने वर्ष 1905 में पूना-स्थित सर्वेंट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी और 1908 में रानडे इंस्टिट्यूट ऑफ इकोनॉमिक्स की स्थापना की थी। दूर-दराज के इलाके तक पहुँचने के लिए उन्होंने लाइब्रेरीज और मोबाइल स्कूलों का चलन भी शुरू किया।

गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर

कवि, गीतकार, लेखक के रूप में पहचाने जाने वाले टैगोर देशवासियों में स्वतंत्रता की अलख जगाने वाले सेनानी भी थे। अक्तूबर 1905 में जब लार्ड कर्जन ने बंगाल को 2 भागों में बाँटने का प्रयास किया, तो इसके विरोध में रवींद्रनाथ टैगोर ने मोर्चा संभाला था। उन्होंने गाँव के जीवन को बहुत करीब से देखा था। ग्रामीण जीवन में फैली अशिक्षा को देखकर उन्होंने बंगाल में 'शांति निकेतन' की स्थापना की। जहाँ गाँव के बच्चों को पेड़ों के नीचे खुले वातावरण में व्यावहारिक शिक्षा देने का चलन शुरू किया। ऐसी शिक्षा देने वाला यह भारत का पहला स्कूल था। उनके मन में इच्छा थी कि यहाँ का माहौल ऐसा होना चाहिए जिसमें शिक्षक और विद्यार्थी के बीच कोई दीवार न हो। उम्र और पद को भूलकर सब एक साथ मिलकर काम कर सकें। जहाँ शिक्षा का मतलब किताबों तक ही सिमट कर न रह जाए। व्यावहारिक शिक्षा के प्रति टैगोर के मन में लगाव को देखकर महात्मा गाँधी ने उन्हें 'गुरुदेव' की उपाधि दी थी।

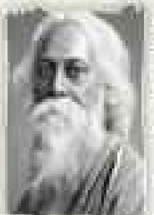

आचार्य कृपलानी

जीवतराम भगवानदास कृपलानी को आचार्य कृपलानी के नाम से जाना जाता है। वे एक स्वतंत्रता सेनानी, भारतीय राजनीतिज्ञ होने के साथ एक शिक्षक भी थे। स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल होने से पहले 1912-1927 तक उन्होंने अध्यापन कार्य किया था। पहली बार वे मुजफ्फरपुर में प्रोफेसर बने। 1917 में गाँधी जी से प्रभावित होकर स्वतंत्रता आंदोलन में शामिल हो गए। माना जाता है कि उस समय बंगाल से भागकर आए क्रांतिकारियों को सुरक्षित स्थान मुहैया कराने से लेकर आर्थिक मदद तक की बंदोबस्त करने में मदद करते थे। राष्ट्रहित के लिए वे अपनी तनख्वाह की आधी से ज्यादा राशि दे देते थे। 1922 में वे गाँधीजी द्वारा स्थापित गुजरात विद्यापीठ में अध्यापन कार्य करने लगे जहाँ उन्हें 'आचार्य' उपनाम प्राप्त हुआ।

ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले

ज्योतिबा फुले भारत के महान समाज सुधारक थे जिन्होंने महिलाओं के शिक्षा और अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी। 19वीं सदी में सामाजिक और शैक्षिक सुधारों पर महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले ने वर्ष 1848 में लड़कियों और महिलाओं को शिक्षित करने की दिशा में साहसनीय कदम उठाए थे। उन्होंने अपने पति ज्योतिबा फुले और फातिमा शेख के साथ मिलकर देश के

पहले कन्या विद्यालय की स्थापना की थी। इस स्कूल में पढ़ाने के लिए शिक्षक नहीं मिल रहे थे। 17 साल की उम्र में उन्होंने पढ़ाना शुरू किया। उनके अध्यापन कार्य के लिए हालांकि लोग उनका विरोध करते थे, लेकिन सावित्रीबाई ने हार नहीं मानी और देश की पहली महिला शिक्षिका होने का गौरव हासिल किया। □

किताब के पन्ने

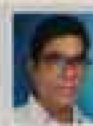

नील की आँखों में हमेशा एक चमक होती थी, कुछ जानने की, कुछ समझने की। वह उन बच्चों में से नहीं था जो किताबें सिर्फ परीक्षा के लिए खोलते हैं। वह उन गुम सवालों का पीछा करता था जो किताबों की लाइनों के पीछे छिपे होते हैं। एक दिन जब उसकी आठवीं की पाठ्यपुस्तक में 'स्वामी विवेकानंद ने कहा था...' पढ़कर अगला पन्ना फटा हुआ मिला, तो बाकी बच्चे इसे नजरअंदाज करके आगे बढ़ गए, लेकिन नील वहीं अटक गया। वह अधूरी बात उसकी नींद में दाखिल हो गई। मन के भीतर से किसी ने धीरे से कहा, 'क्या तुम जानना नहीं चाहते, उन्होंने आगे क्या कहा था?' नील जानना चाहता था, लेकिन जानना उसके लिए इतना आसान नहीं था।

अगली सुबह वह बिना किसी को बताए शहर के सबसे पुराने पुस्तकालय की ओर चल पड़ा। रास्ता लम्बा था, जूतों में मिट्टी भर गई थी, धूप सिर पर थी, लेकिन नील की जिज्ञासा उससे भी तीखी थी। आखिर वह उस टूटी दीवारों वाले पुराने पुस्तकालय के सामने खड़ा था, जिसके बोर्ड पर लिखा था- 'ज्ञानदीप पुस्तकालय'। दरवाजा खड़खड़ाया, चर्र की आवाज आई और भीतर से धूल की एक परत सी उठी। वहाँ एक बूढ़ा आदमी बैठा था, सफेद बाल, चश्मा, और आँखों में एक गहरी शांति। वह रामलाल बाबूजी थे, जो पिछले पैंतीस साल से किताबों की दुनिया के संरक्षक थे।

नील ने संकोच में धीरे से कहा, "मैं जानना चाहता हूँ कि विवेकानंद

जी ने उस अधूरे वाक्य के बाद क्या कहा था।" बाबूजी मुस्कुराए, बिना एक शब्द बोले धीरे से उठे, और सबसे ऊपर वाली शेल्फ से एक पुरानी किताब निकाल लाए। किताब का नाम था- 'जागो, बढ़ो और रुको मत।' उन्होंने कहा, "इसमें न सिर्फ वह वाक्य मिलेगा, बल्कि वो आग भी जो तुम्हारे भीतर कुछ नई लौ जला सकती है।" नील ने किताब ली और वहीं ज़मीन पर बैठकर पढ़ने लगा। हर वाक्य जैसे सीधा उसके भीतर उतर रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी पहाड़ी नदी की धार में बह रहा हो, लेकिन इस बार वह बहाव उसे कहीं गहरे ले जा रहा था-उसके अपने भीतर।

उस दिन के बाद नील का हर दोपहर पुस्तकालय में बीतने लगी। वह किताबें केवल पढ़ता नहीं था, उन्हें जीता था। उसकी आँखों में अब किताबों के पात्र जीवित होने लगे थे। वह जब अब्दुल कलाम की आत्मकथा पढ़ता, तो वह खुद को रॉकेट की परछाइयों के बीच चलता पाता। भगत सिंह की जेल डायरी पढ़ते समय उसकी हथेलियाँ खुद कांपने लगतीं। धीरे-धीरे किताबें नील के लिए केवल पन्नों की सिलवटें नहीं रहीं, वे उसके भीतर का रास्ता बन गईं।

एक दिन बाबूजी ने एक किताब उसके हाथ में रखी, जिस पर कोई नाम नहीं था। बस सुनहरे अक्षरों में लिखा था- 'पढ़ोगे तो बदल जाओगे'। नील ने पूछा, "इसमें क्या है?" बाबूजी ने कहा, "वो सवाल तुमने अब तक नहीं पूछे, उनके जवाब।" नील ने जैसे ही वह किताब खोली, उसे लगा वह किसी और ही दुनिया में पहुँच गया है। पन्ने पलटते ही उसे एहसास हुआ कि वह अब सिर्फ पाठक नहीं, उस कहानी का हिस्सा है। शब्दों ने उसे अपनी कहानियों में खींच लिया। वह अचानक खुद को ऊँचाई पर बैठे विवेकानंद के पास महसूस करता, जैसे कोई अग्नि उसमें भर रहा हो। अगले ही क्षण वह खुद को अब्दुल कलाम के साथ एक मिसाइल प्रोजेक्ट पर चर्चा करते देखता। फिर कभी महात्मा गाँधी की यात्रा में होता, जो चुपचाप सत्य की बात कह रहे होते।

अब नील सिर्फ पढ़ने तक सीमित

नहीं रहा। उसने जान लिया कि इन किताबों की रोशनी को दूसरों तक पहुँचाना है। उसने मोहल्ले के बच्चों को एकत्र करना शुरू किया। कुछ ने बच्चे हँसे, कुछ ने मजाक उड़ाया, लेकिन नील डटा रहा। उसने पंचतंत्र की कहानियाँ सुनाईं, अकबर-बीरबल के किस्से साझा किए, और स्वामी विवेकानंद के विचारों ने बच्चों के भीतर आग भर दी। धीरे-धीरे बच्चे जुड़ते गए। हर रविवार को "कहानियों की पाठशाला" लगने लगी, जिसमें अब न केवल बच्चे, बल्कि उनके माता-पिता भी आने लगे।

नील की आवाज में अब बदलाव था। उसमें विश्वास था, अनुभव था और किताबों से मिली प्रेरणा की स्पष्टता थी। उसने अपने स्कूल में "किताबी दीवार" की शुरुआत की, जहाँ हर बच्चा अपने मनपसंद वाक्य को चॉक से लिखता। एक दिन वहाँ लिखा गया-"मैं वो पन्ना बनना चाहता हूँ, जो किसी की सोच बदल दे।" पूरा स्कूल ठहर गया। उस दिन किसी ने कोई होमवर्क नहीं माँगा, सब सोचते रह गए।

नील का नाम अब शहर से निकलकर जिलों तक फैल चुका था। उसे बाल प्रेरणा सम्मेलन में बुलाया गया। मंच पर खड़े होकर जब उसने बोलना शुरू किया, तो सामने बैठे सैकड़ों बच्चों और शिक्षकों की आँखें उस पर टिकी थीं। नील ने कहा, "मैंने किसी गुरुओं को नहीं पढ़ा। मैंने विवेकानंद, कलाम और गाँधी को पढ़ा। मैंने उन किताबों को पढ़ा जो हमें उड़ना सिखाती हैं, बिना पंखों के। मेरे पास कोई जादू नहीं है, लेकिन मेरे पास शब्द हैं, और शब्दों से बड़ा कोई जादू नहीं होता।"

तालियाँ बजीं, लेकिन नील के लिए यह सिर्फ एक पड़ाव था। उसने "चलती किताबें" नाम से एक पहल शुरू की। एक पुरानी वैन को पुस्तकालय में बदला और गाँव-गाँव जाकर बच्चों को कहानियाँ सुनाना शुरू किया। जहाँ इंटरनेट नहीं था, वहाँ नील पहुँचता और बच्चों से कहता, "तुम्हारे सपनों को उड़ान देने के लिए मोबाइल नहीं, किताब चाहिए।" उसका मंत्र था- 'हर हाथ में किताब, हर दिल में सपना।'

जब वह एक बार फिर ज्ञानदीप पुस्तकालय लौटा, तो बापूजी की आँखों में आँसू थे। उन्होंने वह सुनहरी किताब नील को लौटा दी और कहा, "अब ये तुम्हारी है। अब इसमें जो अधूरे सपने हैं, उन्हें पूरा करने की जिम्मेदारी तुम्हारी है।" नील ने वह किताब अपने हृदय से लगा ली। उस रात उसने प्रण लिया कि वह एक ऐसी जगह बनाएगा जहाँ किताबें चुप न रहें, बल्कि बोलें, सिखाएँ, और प्रेरित करें।

कुछ ही समय बाद "पन्नों की दुनिया" नाम का एक नया पुस्तकालय शुरू हुआ, जहाँ न पाठ्यपुस्तकें थीं, न परीक्षाएँ, केवल प्रेरणाएँ थीं। वहाँ बच्चे आते, कहानियाँ पढ़ते, खुद कहानियाँ लिखते। नील ने उन्हें बताया कि किताबों में दुनिया बदलने की ताकत होती है। वहाँ एक दीवार पर सिर्फ एक पंक्ति लिखी थी- 'जिसने किताब को चुना, उसने भविष्य को चुना।'

अब नील सिर्फ प्रेरक वक्ता नहीं था, वह एक आंदोलन था। वह हर उस बच्चे के भीतर जी रहा था, जो एक सवाल से अपनी यात्रा शुरू करता है। और जब कोई बच्चा उससे पूछता- "क्या ये शब्द भी जिंदगी बदल सकते हैं?" तो नील मुस्कुराकर कहता, "मैं उसी पन्ने का सबूत हूँ, जिसने कभी आधा वाक्य छोड़ा था और फिर पूरा जीवन बदल गया।" □

विदेशों में खिलती हिन्दी की बगिया

डॉ. वेद मित्र शुक्ल
एसोसिएट प्रोफेसर, अंग्रेजी
विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

हिन्दी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि एक भावना है। यह एक ऐसी आत्मीय डोर है जो लाखों-करोड़ों भारतीयों को, चाहे वे देश में हों या विदेश में, एक साझा सांस्कृतिक मूल और पहचान से जोड़ती है। विदेशों में बसे भारतवंशियों के जीवन में हिन्दी केवल संवाद का माध्यम नहीं बल्कि उनकी जड़ों से जुड़े रहने का एक जीवंत पुल है। 15 से 17 फरवरी 2023 को नांदी, फिजी के देनाराऊ द्वीप कन्वेंशन सेंटर में आयोजित 12वें विश्व हिन्दी सम्मेलन में सम्मिलित होकर मुझे इसका प्रत्यक्ष अनुभव हुआ।

यह सम्मेलन न केवल एक भाषायी आयोजन था, बल्कि एक सांस्कृतिक पर्व भी था, जहाँ विश्व भर के हिन्दी भाषी विद्वान, साहित्यकार, पत्रकार, भाषा विज्ञानी और हिन्दी प्रेमी एकत्रित हुए थे। सम्मेलन का उद्देश्य स्पष्ट था- विश्व पटल पर हिन्दी की वर्तमान स्थिति को समझना और इसके भावी विकास की दिशा तय करना। परन्तु, इससे भी पहले, एक अनुभव जो मेरे मन को गहराई से स्पर्श कर गया, वह था फिजी के आम लोगों से हिन्दी में संवाद।

विश्व हिन्दी सम्मेलन में भाग लेने के दौरान जब हम फिजी के स्थानीय दुकानदारों से बात कर रहे थे, तो उनका भाषायी व्यवहार चौंकाने वाला था। वे एक साथ अंग्रेजी, फिजियन और फिजीयाई हिन्दी का सहज प्रयोग कर रहे थे। उनकी बहुभाषिकता गहरी थी, लेकिन जब उन्हें यह पता चला कि हम भारत से आए हैं और हिन्दी भाषी हैं, तो उन्होंने उसी क्षण से हिन्दी में संवाद करना प्रारम्भ कर दिया।

यही नहीं, एक फिजियन युवक ने अत्यंत गर्व से बताया कि उनकी माताएँ उन्हें शपथ दिलाती हैं कि वे अपनी भाषा हिन्दी को कभी न छोड़ें। जब तक विशेष आवश्यकता न हो, वे अपने समुदाय में और घरों में केवल हिन्दी ही बोलते हैं। उनकी हिन्दी शब्दावली में कुछ स्थानीय शब्द और उच्चारण आ गए हैं, परन्तु यह मूलतः भारतीय बोली की संवेदना से जुड़ी हुई है। यह देखकर लगा कि हिन्दी उनके लिए केवल एक भाषा नहीं, बल्कि उनका इतिहास, उनकी पहचान और उनकी सांस्कृतिक आत्मा है।

बच्चों, हम सबको यह जानना चाहिए कि फिजी में बसे अधिकांश भारतीय मूल के लोग उन्नीसवीं सदी में ब्रिटिश उपनिवेशवादी शासन द्वारा 'गिरमिटिया मजदूरों' के रूप में भारत के उत्तर प्रदेश और बिहार से वहाँ ले जाए गए थे। इन गिरमिटिया मजदूरों के साथ उनकी संस्कृति, रीति-रिवाज, लोकगीत और भाषा भी वहाँ पहुँची। वहाँ तक औपनिवेशिक दमन, अपमान और अस्मिता के संघर्ष के बीच भी उन्होंने हिन्दी को जीवित रखा।

उनकी हिन्दी में आज भी भारत की आत्मा की झलक को आसानी से देखा जा सकता है। उनका 'रामायण' प्रेम, 'भजन मंडली', 'होली गान', 'आल्हा-चौपाई' गान और पारम्परिक कथाएँ हिन्दी की वैश्विक यात्रा की कहानी कहती हैं।

हिन्दी भाषा न केवल भारत की पहचान है, बल्कि यह हमारे जीवन-मूल्यों, संस्कृति और परम्पराओं की संवाहक भी है। विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। हिन्दी विश्व की वैज्ञानिक, सरल और अभिव्यक्तिपूर्ण भाषा है। लगभग 50 देशों में 2 करोड़ से अधिक भारतीय मूल के लोग बसे हुए हैं, जो आपसी सम्पर्क के लिए हिन्दी का प्रयोग करते हैं। अमेरिका, ब्रिटेन, मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम आदि देशों में हिन्दी के पठन-पाठन की व्यवस्था है। अमेरिका के कई विश्वविद्यालयों में 'दक्षिण एशियाई अध्ययन विभाग' के अंतर्गत हिन्दी पढ़ाई जाती है। सूचना क्रांति और वैश्वीकरण ने हिन्दी के प्रचार-प्रसार के नए मार्ग खोले हैं। इंटरनेट, सोशल मीडिया और बॉलीवुड के माध्यम से हिन्दी वैश्विक पटल पर अपनी पहचान बना रही है।

भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद् जैसे संस्थानों की भूमिका अहम है, जो विदेशी संस्थानों में हिन्दी का अध्यापन-संचालन करते हैं। इसके साथ ही विदेश मंत्रालय के हिन्दी एवं भारतीय संस्कृति से जुड़े विभागों की ओर से भी इस दिशा में सक्रिय भूमिका रहती है।

विश्व हिन्दी सम्मेलन में भी जब विभिन्न देशों से आए विद्वानों ने अपने विचार रखे, तो यह और अधिक स्पष्ट हुआ कि हिन्दी अब केवल भारत तक सीमित नहीं रही है। अमेरिका, मॉरीशस, सूरीनाम, त्रिनिदाद, नेपाल, दक्षिण अफ्रीका, गुयाना, सिंगापुर और फिजी जैसे देशों में हिन्दी न केवल बोली जाती है, बल्कि वहाँ के विद्यालयों, विश्वविद्यालयों और सांस्कृतिक मंचों पर पढ़ाई, लिखाई और सृजन का विषय भी है। हिन्दी में आज विश्व भर में पत्र-पत्रिकाएँ निकल रही हैं, यू-ट्यूब चैनल, ब्लॉग और सोशल मीडिया मंचों पर हिन्दी के लाखों पाठक और रचनाकार सक्रिय हैं। हिन्दी में बनने वाली फिल्में, धारावाहिक और वेब सीरीज भी वैश्विक दर्शकों को अपनी ओर खींच रही हैं।

आज जब वैश्वीकरण का दौर है और अंग्रेजी तथा अन्य भाषाएँ शिक्षा और तकनीकी जगत में प्रमुख होती जा रही हैं, तब हिन्दी को सशक्त रखने का अर्थ केवल भाषा को संरक्षित करना नहीं, बल्कि अपनी संस्कृति, परम्परा और पहचान को जीवित रखना है। हमें हिन्दी को केवल घरेलू या भावनात्मक भाषा ही न मानकर आधुनिक ज्ञान, विज्ञान, शोध और संवाद की भाषा के रूप में विकसित करना होगा। ऐसी ही बातों को ध्यान में रखते हुए, 12वें विश्व हिन्दी सम्मेलन का मुख्य विषय 'हिन्दी-पारम्परिक ज्ञान से कृत्रिम मेधा तक' तय हुआ। भारत सरकार के साथ मिलकर प्रवासी भारतीय संगठन, सांस्कृतिक संस्थान आदि जैसे अनेक संस्थान हिन्दी को नई पीढ़ियों के लिए आकर्षक और उपयोगी बनाने में सतत प्रयासरत हैं।

फिजी में प्राप्त अनुभव और विश्व हिन्दी सम्मेलन की चर्चाएँ यही कहती हैं कि हिन्दी की वैश्विक यात्रा अभी अधूरी नहीं है। यह यात्रा केवल शब्दों की नहीं, संस्कारों की है। हिन्दी एक वटवृक्ष है जिसकी जड़ें भारत में हैं और जिसकी शाखाएँ पूरे विश्व में फैली हुई हैं। यदि हम सब, विशेषकर बच्चे और युवा, इस वटवृक्ष को सींचते रहें, तो यह भविष्य में और भी फलदायी और छायादार बनेगा। हम सब, जहाँ भी रहें, हिन्दी को अपनी आत्मा में बसाकर, उसे केवल बोलें ही नहीं, लिखें भी। क्योंकि हिन्दी केवल एक भाषा नहीं, एक संस्कार है- जो हमें जोड़ता है, संजोता है और सशक्त बनाता है। ❑

अंतिम मुलाक़ात और उसके बाद

भगत सिंह अपने परिवार वालों से अंतिम बार 3 मार्च, 1931 को मिले। उस दिन की भगत मुलाकात में माता-पिता थे, दादा जी थे, चाची थीं और दो छोटे भाई, कुलबीर सिंह एवं कुलतार सिंह थे। सभी जानते थे कि भगत सिंह अब कुछ दिनों के मेहमान हैं इसलिए सभी के मन अत्यधिक दुखी थे। आँसू उमड़ उमड़ कर आ रहे थे। भगत सिंह के दादा सरदार अर्जुन सिंह, जिन्होंने बचपन में ही भगत सिंह को क्रांति की दीक्षा दी थी और उन्हें देश की बलिवेदी पर अर्पित करने की प्रतिज्ञा की थी, आज बहुत दुखी थे। वे भगत सिंह के पास आए, बड़े प्यार से उनके सिर पर हाथ फेरा, कुछ बोलने के लिए उनके होंठ हिले, पर कैसा दुख छाया हुआ था कि गले से आवाज न निकल सकी। वे चुपचाप खड़े हुए और उनके आँसू बहते रहे।

हालाँकि मुलाकात के लिए आए सभी लोग बहुत दुखी थे, फिर भी भगत सिंह सदा की भाँति पूर्णतः शांत एवं प्रसन्न थे। उन्होंने अपना वजन बढ़ जाने की खबर परिवार वालों को दी। सबको विश्वास था कि अभी और भी मुलाकातें होंगी जबकि भगत सिंह को विश्वास था कि यह अंतिम मुलाकात है। उन्होंने सबसे अलग-अलग बातें की और बातों ही बातों में सबको प्रसन्न करने की कोशिश भी की। सबको धीरज दिया और अंत में अपनी माताजी को पास बुला कर हँसते-हँसते कहा, "लाश लेने आप मत आना, कुलबीर को भेज देना। कहीं आप रो पड़ीं तो लोग कहेंगे भगत सिंह की माँ रो रही है।" इतना कह के इतने जोर से हँसे कि सब हैरानी से उनकी ओर देखने लगे।

मुलाकात का समय समाप्त हुआ और सब चले गए। भगत सिंह ने उसी दिन दो पत्र कुलबीर सिंह और कुलतार सिंह के नाम लिखे। भगत सिंह को अपने जीवन से कोई मोह नहीं था। उनके रक्त की एक-एक बूँद मातृभूमि के लिए थी। बीतता हुआ हर क्षण बलिदान के क्षण को निकट ला रहा था और वे पूर्ण प्रसन्नता एवं पूर्ण उत्सुकता से उस क्षण की प्रतीक्षा कर रहे थे। इसका यह अर्थ नहीं कि भगत सिंह को अपने परिवार से कोई लगाव नहीं था। उन्हें सबके साथ पूरा स्नेह था और वे अपने उत्तरदायित्व को भी पूरी तरह महसूस करते थे।

अंतिम मुलाकात के दिन लिखे दोनों पत्रों से भगत सिंह के हृदय का स्पष्ट चित्र हमारे सामने आता है।

अज़ीज़न कुलबीर सिंह,

तुमने मेरे लिए बहुत कुछ किया। मुलाकात के वक्त अपने खत के जवाब में कुछ लिख देने के लिए कहा। कुछ अल्फाज लिख दूँ और बस। देखो मैंने किसी के लिए कुछ न किया–तुम्हारे लिए भी कुछ नहीं। बिल्कुल मुसीबत में छोड़कर जा रहा हूँ, मगर भाई हौसला रखना, मुसीबत में भी कभी मत घबराना। इसके सिवा और क्या कह सकता हूँ। अमरीका जा सकते तो बहुत अच्छा होता, मगर अब तो यह भी नामुमकिन मालूम होता है। आहिस्ता आहिस्ता मेहनत से पढ़ते जाना। जहाँ तक हो सके मुहब्बत से सब लोग गुजारा करना। इसके सिवाय और क्या कहूँ?

जानता हूँ आज तुम्हारे दिल के अंदर गम का समुद्र उमड़ रहा है। भाई तुम्हारी बात सोचकर मेरी आँखों में आँसू आ रहे हैं, मगर किया क्या जाए? हौसला करना मेरे अज़ीज, मेरे बहुत प्यारे भाई, जिन्दगी बड़ी सख्त है और दुनिया बड़ी बेरहम। सिर्फ मुहब्बत और हौसले से ही गुजारा हो सकेगा। कुलतार की तालीम की फिक्र भी तुम ही करना। बड़ी शर्म आती है और अफसोस के सिवा मैं कर ही क्या सकता हूँ। अजीज भाई अलविदा।

तुम्हारा शुभचिंतक

भगत सिंह

भगत सिंह ने उसी दिन दूसरा पत्र अपने छोटे भाई कुलतार सिंह को, जिनकी आयु उस समय 12 वर्ष थी, लिखा।

अज़ीज़ कुलतार,

आज तुम्हारी आँखों में आँसू देखकर बहुत दुख हुआ। आज तुम्हारी बातों में बहुत दर्द था। तुम्हारे आँसू मुझसे सहन नहीं होते। हिम्मत से शिक्षा प्राप्त करना और सेहत का ख्याल रखना। हौसला रखना और क्या कहूँ?

उसे फिक्र है हरदम नया तर्जे जफा क्या है,

हमें यह शौक देखें सितम की इंतहा क्या है।

दहर से क्यों खफा रहें चर्ख का क्यों गिला करें,

सारा जहाँ अदू सही आओ मुकाबिला करें।

कोई दम का मेहमाँ हूँ ए अहले महफिल,

चरागे सहर हूँ बुझा चाहता हूँ।

मेरी हवा में रहेगी ख्याल की बिजली,

यह मुश्ते खाक है फानी रहे न रहे।

अच्छा रुखसत। खुश रहो अहले वतन हम तो सफर करते हैं। हौसले से रहना।

नमस्ते।

तुम्हारा भाई

भगत सिंह

– प्रकाशन विभाग की पुस्तक 'अमर भगत सिंह' से साभार

आमू

निधि खत्री धामी
प्रतिष्ठित लेखिका, स्वतंत्र कला
और ब्राण्डिंग पार्टनरशिप

दीवार ढह चुकी थी। ईंटों, मिट्टी और रेत से आँगन भरा हुआ था। मजदूरों के कठोर हाथ निर्ममता पूर्वक छेनी, कुल्हाड़ी व नाना प्रकार के औजारों से पेड़ के आस-पास बना चबूतरा तोड़ रहे थे। मैं स्कूल से घर पहुँच चुकी थी। अपने कमरे की खिड़की से हृदय को उद्वेलित करने वाला दृश्य देख रही थी।

अप्रैल का महीना था... आस-पास के सभी वृक्षों में आम के मंजर दिखाई देते थे। नाशपाती, आडू, लीची सभी अपने फलों से लदी डालियों से झुके हुए थे। किन्तु इन सब के बीच आम का वो पेड़ अत्यन्त उदास, अकेला और दुखित दिखता। वो एक ठूँठ था जो कभी फल नहीं दे सकता था।

मुझे वो दिन याद है जब माँ ने... बच्चों के लिए आम के उस पेड़ पर झूला लगाया था। उसकी मोटी रस्सों से जब झोंका ले राग गाने की इच्छा पर किसी ने साक्षात्कार किया हो। उस वृक्ष से मेरी आत्मा जुड़ी हुई थी। अक्सर उसकी शाखाओं पर बैठकर उसकी कोमल पत्तियों को सहलाना मुझे अच्छा लगता था। वो वृक्ष नहीं मेरा स्नेह था। अक्सर मैं उसको अपने कमरे की खिड़की से देखा करती थी। रात में

चाँद उसकी पत्तियों पर अटका नज़र आता ...तो सुबह ...जब सूरज की किरणों को मेरे कमरे की खिड़की तक प्रक्षेपित करता। वर्षा ऋतु के आगमन पर जब कोयल उस पर क्रंदन करती ...या फिर वो अनमना सा कौआ रोटी का टुकड़ा लिए उसकी डाल पर काँव-काँव करता तो मेरे मन का मयूर नाच उठता। प्यार से मैं इसे आमू बुलाती थी। यह मेरा मित्र था। उसके विशाल तने को हृदय से लगाकर कितनी बार आइस-पाइस का खेल खेला था। उसकी पत्तियों का अलबेलापन मुझे अब तक याद है। सारे पेड़ मौसम में फल देते थे किन्तु आमू ...में फल न के बराबर लगते। आमू और मेरा स्नेह अटूट था। जब भी कोई फल लगता आमू के कोटर में छिपा के रख देती। प्रकृति का ये उपहार मुझे सबसे प्रिय था।

एक बार जब मैं तेज ज्वर से पीड़ित थी और दो तीन दिन पलंग पर पड़ी रही तब आमू और मेरी मित्रता और प्रगाढ़ हो गई।

एक पक्षी था जो मुझे ...चौकन्ना करता था। किसी वर्ष उस पर एक दो फल आ जाते तो उसकी ...खुशी देखते बनती थी।

गर्मियों में जब तन को झुलसाने वाली लू चलती और दोपहर में लोग घरों के अंदर कैद कूलर की हवा में सुस्ताते...। मैं चुपचाप से दबे पाँव उसकी शाखाओं पर चढ़ जाती। घंटों उसके साथ समय व्यतीत करती। उस पर लगे मकड़ी के जाले तने पर रेंगती चींटियाँ ...तीन धारियों वाली गिलहरी ...सब मुझसे परिचित थे।

आमू में बौर प्रस्फुटित होते किन्तु फल एक दो ही लगते। अतः घर के लोगों में उसके प्रति रुचि कम होती जा रही थी। मानवजाति की यही दुविधा है... जब तक कोई प्राणी फल देता है... उससे कोई कार्य पूर्ण होता है... उससे हृदय के तार जुड़ जाते हैं। किन्तु जब वह आवश्यकतानुसार कुछ नहीं दे पाता तो उसका जीवन निरर्थक लगने लगता है। फिर चाहे उसमें अन्य कई गुण हों। एक अभाव उसकी छवि को धूमिल कर देता है। पिताजी को लगा कि जितनी जगह आमू ने घेर रखी है वो व्यर्थ है। उस स्थान पर कुछ निर्माण किया जा सकता है। बाकी पेड़ को काटकर उसकी लकड़ी ईंधन बनाने के काम आएगी।

उनकी ये बात सुन मेरा हृदय क्षुब्ध हो गया। फिर किसी को क्या समझाएँ? भावनाएँ तो इंसानों व पालतू जानवरों से जुड़ती हैं ...एक मूक और ठूँठ वृक्ष से नहीं। उनको इस स्नेह के विषय में समझाना नामुमकिन था।

उस रात बादलों और मेरे नयनों के अश्रु ...रात्रिकाल की बारिश व सुबकन में प्रतिस्पर्धा थी। सभी जग के चलते।

मैं एकटक आमू को निहार रही थी। मूक प्रेम ...की परिभाषा क्या होती है ये मैंने उसी से सीखा था।

आज की सुबह गमगीन थी... कल से निवाला नीचे नहीं उतरा था। बाहर

जब कभी मैंने आमू के कोटर में अपनी चंद अनमोल वस्तुएँ निकालीं ...जो चिड़िया के पंख, चंद सिक्के, नाग के पत्ते ...दो कानों की बालियाँ ...कागज की कतरनें ...और भी बहुत कुछ ...।

...और अब सबकुछ टूट चुका था। मजदूरों ने आरी से तने को काटना शुरू कर दिया था। हर एक वार मेरे कोमल बाल हृदय को अंदर तक व्यथित कर देता था। मैं उसे टूटता हुआ देख रही थी और वो मुझे। उसके उलाहना था कि मेरे अब्बू मेरा रोक क्यों नहीं पाते थे ...किन्तु वह चुप था।

माँ बेसन का लड्डू हाथ में लिए मुझे फुसला रही थी। इस बात से अनभिज्ञ ...कि वो अनुराग अटूट था ...इकलौता था। जिसे अब तो कोई वस्तु पूरा नहीं कर सकती थी।

रात तक आमू सड़क पर लेट चुका था।

उसकी छाल पर रुदन करने वाला कोई नहीं था...। अन्य बच्चे खुश थे ...उनको खेलने के लिए कुछ ज्यादा जगह मिल गई थी ...माँ को नए तख्ता बनने की खुशी थी। एक हम ही थम से गए थे। यदि आज कुछ खाक दिख रहा था। आमू की पत्तियों से छनती हुई चन्द्रिका अब शायद ही मुझे प्राप्त होगी ...आकाश पर टिमटिमाते तारे देखते हुए ...मैं सो चुकी थी।

धीरे-धीरे समय के साथ आमू के जाने का शोक जाता रहा। एक वर्ष गुजर चुका था। फिर वही मौसम के पल ...फिर वही वर्षा का आगमन। सारे वृक्ष स्वच्छ और नहाए हुए से प्रतीत होते थे। मैं आँगन में जलतरंग करती बूँदों को देख रही थी ...कि अचानक मेरी निगाह आँगन के कोने पर पड़ी मिट्टी पर गई...। वहाँ एक नन्हा अंकुर ...अपने कोमल पल्लवों के साथ उपस्थित था...। कितना उत्कृष्ट कितना निर्मल...। मैंने प्रकृति की इस अनुकम्पा को धन्यवाद दिया...

मेरा आमू पुनः जीवित हो गया।

चित्र बनाओ प्रतियोगिता

(नवम्बर, 2025)

'बाल भारती' के लोकप्रिय कॉलम 'चित्र बनाओ प्रतियोगिता' में 'विज्ञान और हमारा भविष्य' विषय पर चित्र बनाकर अपना पूरा पता और फोटो के साथ कूपन लगाकर 5 अक्तूबर, 2025 तक हमें भेजें। पुरस्कृत तथा सराहनीय चित्रों को बाल भारती में प्रकाशित किया जाएगा। प्रथम विजेता को हमारी ओर से एक वर्ष तक 'बाल भारती' की मुफ्त सदस्यता दी जाएगी और प्रकाशित चित्रों के कलाकारों को **'बाल भारती'** की प्रति भेजी जाएगी। हमारा पता है- **बाल भारती,** कमरा नं- 645, छठा तल, सूचना भवन, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003, हमारा ईमेल है: balbharti-dpd@gov.in

नाम ....

आयु ....

पता ....

फोन नं. ....

इस प्रतियोगिता में 16 वर्ष तक के बच्चे ही भाग ले सकते हैं।

शुद्ध उच्चारण और लेखन

डॉ. नारायण दत्त मिश्र
संस्कृत लेखक
और पत्रकार

'आओ संस्कृत सीखें' इत्यत्र सर्वेषां स्वागतम्, अस्तु। 'आओ संस्कृत सीखें' इस प्रस्तुति में आप इन दिनों जान रहे हैं, शब्दों के शुद्ध उच्चारण और शुद्ध लेखन के बारे में। जिसे आप कुछ सरल वाक्यों के साथ भी कुछ दृढ़ कर लिया करते हैं। तो बढ़ाते हैं इसी क्रम को कुछ और उन शब्दों के साथ जिनके उच्चारण और लेखन में हम कई बार अशुद्धि कर जाते हैं, गलती कर जाते हैं। शुद्धता और अशुद्धता के कई उदाहरणों के क्रम में महत्त्व को महत्व के रूप में लिखने और पढ़े जाने की प्रवृत्ति या कुप्रवृत्ति के बारे क्या आप जानते हैं? वस्तुतः महत्व ऐसा लिखना और पढ़ना अशुद्ध होता है क्योंकि महत् और त्व इस प्रत्यय के योग से बना है शब्द महत्त्व न कि महत्व! आइए महत्त्व को हम महत्व के रूप में न लिखें और बोलें, इस तथ्य को अधिक दृढ़ करने के लिए कुछ वाक्यों के प्रयोग देख लेते हैं।

जैसे एक वाक्य है– संस्कृतेः महत्त्वम् अधिकम् अवगन्तुं संस्कृतं मुख्यं साधनम् अस्ति। अर्थात्

संस्कृति के महत्त्व को अधिक समझने के लिए संस्कृत मुख्य साधन है।

भारतस्य राजनीतिपटले प्रधानमन्त्रिणः महत्त्वम् अधिकं वर्तते। अर्थात्

भारत के राजनीति पटल में प्रधानमंत्री का महत्त्व अधिक होता है।

ऐसे ही एक और वाक्य ले लेते हैं। महत्त्व-शब्दः महत् इत्येतस्य त्व इत्येतस्य च संयोगेन निष्पन्नः। महत्त्व यह शब्द महत् और त्व इन दोनों के संयोग से बना है।

यहाँ हमें महत्त्व के उच्चारण और लेखन पर देना है विशेष अवधान, अर्थात् महत्त्व में जो दो अर्ध तकार हैं उनके लेखन और उससे भी बढ़कर उनके उच्चारण पर ध्यान केन्द्रित करना है, तब ही हम आज की प्रवृत्ति के अनुसार किसी तरह की अशुद्धि नहीं करेंगे, कहने का अर्थ यह कि महत्त्व के दो अर्ध तकारों में एक अर्ध तकार का हम लोप नहीं करें, कम से कम जब हम और आप संस्कृत से जुड़े होते हैं तब तो अवश्य ही ऐसा कर जाना बड़ी अशुद्धि कही जाएगी, क्योंकि हम सभी जानते हैं कि संस्कृत एक ऐसी भाषा है जिसकी वैज्ञानिकता और तार्किकता इतनी व्यापक है कि हम इस भाषा में जो या जैसे लिखते हैं वह या वैसा ही बोला करते हैं और यदि हम ऐसा नहीं कर पा रहे तो हम संस्कृत के संस्कृतत्व को आघात पहुँचा रहे हैं या अनवधानतावश हम स्वयं इस भाषा की वैज्ञानिकता ही नहीं समझ पा रहे। अस्तु, अब बढ़ते हैं हम आगे एक ऐसे ही शब्द की ओर, जिसके लेखन और उच्चारण में हम सामान्य रूप से अब अधिक अशुद्धि करने लगे हैं, और वह शब्द है अत्यधिक

जिसे अत्यधिक शुद्ध रूप में न केवल लिखने की ही अपितु बोलने की भी अशुद्धि या कुप्रवृत्ति बढ़ गई है। पर हम जब अति और अधिक इन दो शब्दों से मिलकर बने अत्यधिक शब्द के विन्यास में अपना समझ/ध्यान दृढ़ कर लें तो सम्भवतः भूल से भी अशुद्धि नहीं होगी। तो यह शब्द अत्यधिक इस रूप में ही है सर्वथा शुद्ध, इस संस्कार को और दृढ़ करने के लिए आइए अपने ज्ञान के अनुसार, संस्कृत वाक्यों का कर लेते हैं अभ्यास।

अत्यधिकवृष्टिः जाता अधुना तु वृष्टिः न आवश्यकी एव।

अर्थात्

अत्यधिक वर्षा हो चुकी, अब तो वर्षा आवश्यक ही नहीं।

अत्यधिकोष्णता अत्यधिकशैत्यं च मे न रोचेते।

अर्थात्

अत्यधिक गर्मी और अत्यधिक ठंड मुझे ठीक नहीं लगते।

ऐसे ही अगला वाक्य देख लेते हैं - *अत्यधिकस्नेहः अत्यधिकक्रोधः उभौ हि स्वभावौ न सम्यक् उक्तौ।*

अर्थात्

अत्यधिक स्नेह और अत्यधिक क्रोध, ये दोनों ही स्वभाव ठीक नहीं कहे गए।

तो इस बार 'आओ संस्कृत सीखें' की इस शृंखला में आपने महत्त्व और अत्यधिक इन दो शब्दों के शुद्ध स्वरूप और उनके लेखन और उच्चारण के बारे में जाना और विशेष रूप से कुछ वाक्यों के साथ इन शब्दों के शुद्ध स्वरूप को आपने अवश्य ही हृदयंगम कर लिया है, इसी विश्वास के साथ 'आओ संस्कृत सीखें' के इस क्रम में इतना ही। तावत् सर्वं शुभम् अस्तु, नमो नमः। ❑

अपने देश की लोकप्रिय भाषा मराठी

मराठी	हिन्दी	मराठी रोमन	अंग्रेजी
मी इंग्रजी, मराठी, हिंदी, आणि कोकणी बोलू शकतो.	मैं अंग्रेजी, मराठी, हिंदी और कोंकणी बोल सकता हूं।	Mi Engraji, Marathi, Hindi, ani Koknee bolu shakato.	I can speak English, Marathi, Hindi and Konkani.
तुझ्या घरी जेवण कोण बनवतं?	आपके घर में खाना कौन बनाता है?	Tujhya ghari jevan kon banavata?	Who cooks food in your house?
माझ्या घरी आई तर कधी बाबा जेवण बनवतात.	हमारे घर में कभी माँ और कभी पिताजी खाना बनाते हैं।	Majhya ghari aai tar kadhi baba hi jevan banavatat.	Either my father or mother cook food in our house.
तुला शाळेत कोण पोहचवून देतं?	आपको स्कूल कौन पहुँचाता है?	Tula shalet kon pohachvun deta?	Who drops you at school?
मला शाळेत सोडायला कधी आई तर कधी बाबा येतात.	मुझे स्कूल छोड़ने कभी माँ और कभी पिताजी आते हैं।	Mala shalet sodayala kadhi aai tar kadhi baba yetata.	Either my father or my mother drop me at school.

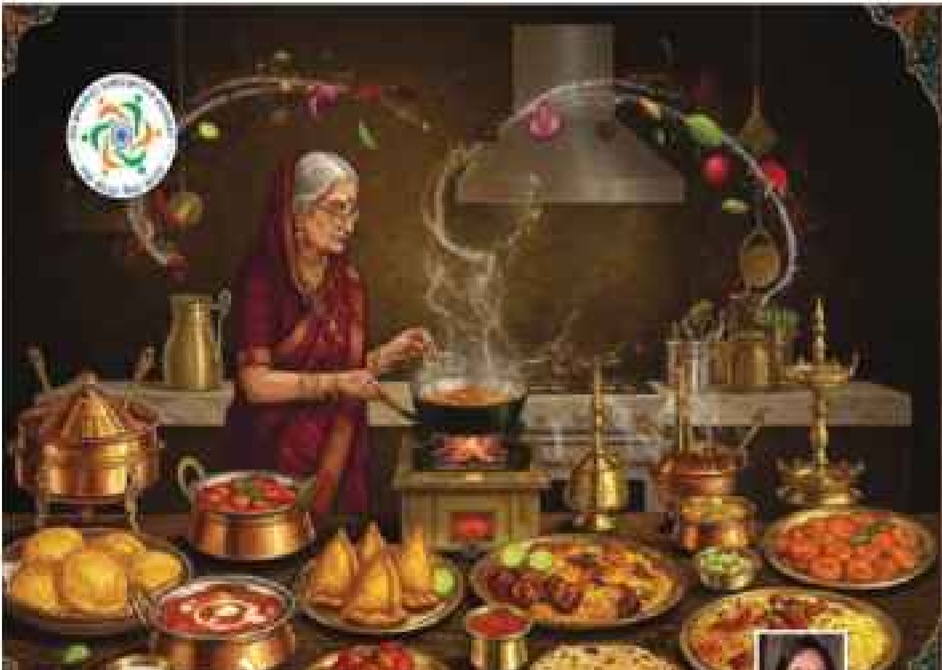

भारत के स्वाद
एक देश अनेक पकवान

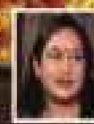

पल्लवी भारद्वाज
[illegible]

बच्चो! आज हम आपको भारत के अलग-अलग राज्यों के खट्टे-मीठे स्वाद और पकवानों के मजेदार सफर पर ले चलेंगे। आपने यह कहावत तो जरूर सुनी होगी- 'कोस-कोस पर बदले पानी, चार कोस पर बानी।' खाने के मामले में भी बिल्कुल यही बात है। भारत के हर कोने में एक नया और खास स्वाद बसता है। हमारे देश के हर राज्य, शहर और गाँव में न केवल बोली, पहनावा और रीति-रिवाज अलग होते हैं, बल्कि खाने-पीने के तरीके और स्वाद भी अलग होते हैं। तो चलिए! आज हम सब भारत के अलग-अलग राज्यों के स्वादिष्ट व्यंजनों और वहाँ की अनोखी पाक कला को जानने का सफर शुरू करते हैं।

भारत में खाना बनाना केवल पेट भरने का साधन नहीं, बल्कि एक कला है, और इसलिए इसे 'पाक कला' कहा जाता है। हमारे देश में पुराने समय से ही खाना बनाने की हजारों अलग-अलग विधियाँ प्रचलित हैं। भारत के अलग-अलग राज्यों में लगभग 25 प्रकार के मसाले उगाए जाते हैं और भोजन पकाने में उनका इस्तेमाल किया जाता है। खाना पकाने के परम्परागत तरीके और अनोखे मसाले ही भारतीय भोजन को पूरी दुनिया में अलग पहचान देते हैं। अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर में तो एक जगह का नाम ही

'लिटिल इंडिया' है, जहाँ तरह-तरह के भारतीय व्यंजन मिलते हैं और वहाँ के लोग भी उन्हें बड़े चाव से खाते हैं।

भारत का भोजन असल में एक 'स्वादों का संगम' है। चाहे बंगाल का मीठा-तीखा खाना हो, राजस्थान का शाही मारवाड़ी भोजन, दक्षिण भारत का नारियल वाला जायका या पंजाब का घी और मक्खन से भरा स्वाद- शाकाहारी हो या मांसाहारी, हर तरह के व्यंजन भारत की अद्भुत विविधता की कहानी कहते हैं। दरअसल हर राज्य का पारम्परिक भोजन वहाँ की जलवायु, खेती-बाड़ी, स्थानीय फसलों और उपलब्ध चीजों पर निर्भर करता है। यही वजह है कि अलग-अलग इलाकों के स्वाद भी पूरी तरह से अलग मिलते हैं।

उत्तर भारत का भोजन

पंजाब की थाली में तुम्हें मक्खन से भरी गरमागरम मक्के की रोटी और सरसों का साग मिलेगा। इसके साथ छोले भटूरे, पनीर बटर मसाला, ठंडी लस्सी और मीठे में गुलाब जामुन का मजा ही कुछ और है।

उत्तर प्रदेश का अवधी खाना दुनिया भर में मशहूर है। यहाँ तुम्हें शाही नवाबी बिरयानी, स्वादिष्ट कबाब, कुरकुरी कचौड़ी, बेसन की सब्जी और जलेबी खाने को मिलेगी तो वहीं बनारस की चटपटी चाट और मथुरा के मीठे पेड़े भी बहुत ही लोकप्रिय हैं।

राजस्थान का शाही दाल-बाटी-चूरमा पूरी दुनिया में जाना जाता है। यहाँ के पकवान मसालेदार और स्वाद से भरे होते हैं, जैसे गट्टे की सब्जी, कढ़ी, बाजरे की रोटी, केर सांगरी की सब्जी और मूंग दाल का हलवा।

हमारे प्यारे जम्मू-कश्मीर का भोजन अपनी अनोखी खुशबू और खास मसालों के लिए जाना जाता है। यहाँ के मशहूर व्यंजनों में लजीज रोगन जोश (एक खास मटन करी), सुगंधित कश्मीरी पुलाव और स्वादिष्ट दम आलू शामिल हैं। सर्दियों में वहाँ की पारम्परिक चाय कहवा भी

खूब पसंद की जाती है, जो स्वाद में लाजवाब होती है।

इसके अलावा दिल्ली का जिक्र करें तो यहाँ के मुगलई व्यंजन और स्ट्रीट फूड जैसे छोले-भटूरे, चाट, कबाब, बिरयानी और पराठे बहुत ही मशहूर हैं। दिल्ली का खाना कई संस्कृतियों का संगम है जो इसे और भी खास बनाता है।

पहाड़ी राज्य हिमाचल प्रदेश का भोजन थोड़ा कम मसालेदार होता है, जिसमें थुक्पा, धाम, सिड्डू और मदरा जैसे खास व्यंजन शामिल हैं। ये व्यंजन पहाड़ी जीवनशैली और यहाँ आसानी से मिलने वाली चीजों से बनाए जाते हैं।

उत्तराखंड में तुम्हें पहाड़ी भोजन जैसे गहत की दाल, आलू के गुटके और बाल मिठाई मिलेगी। यहाँ के व्यंजन अपनी सादगी और पौष्टिकता के लिए जाने जाते हैं।

दक्षिण भारत का भोजन

तमिलनाडु में तुम्हें डोसा, इडली, सांभर, उत्तपम और वड़ा मिलेंगे, जो पूरे देश में बहुत प्रसिद्ध हैं। इन व्यंजनों का स्वाद सुबह के नाश्ते से लेकर रात के खाने तक, हर समय मन को बहुत भाता है।

केरल जिसे 'ईश्वर का अपना देश' (God's Own Country) भी कहते हैं, यहाँ का भोजन भी उतना ही दिव्य है। यहाँ का अप्पम, पुट्टू, स्टू और नारियल तेल में पका खाना बहुत ही स्वादिष्ट होता है। ओणम जैसे त्योहारों पर परोसी जाने वाली भव्य 'सद्या' थाली तो अपने आप में एक पूरा उत्सव है, जिसमें कई तरह के व्यंजन होते हैं।

आंध्र प्रदेश के खाने में तीखापन बहुत ज्यादा होता है, क्योंकि यहाँ मिर्च-मसालों का खूब इस्तेमाल होता है। आंध्र थाली, गोंगुरा पचड़ी (एक खट्टी चटनी) और मिर्ची का सालन यहाँ के खास व्यंजन हैं, जो तीखा खाने वालों को बहुत पसंद आते हैं।

कर्नाटक में तुम्हें रवा डोसा, मैसूर पाक (एक बहुत मीठी मिठाई), बिसिबेले भात और मैंगलोर बोंडा जैसे खास पकवान मिलेंगे। कर्नाटक का भोजन स्वाद और सेहत का एक अनोखा मेल है।

पश्चिम भारत का भोजन

महाराष्ट्र के व्यंजन अपने तीखेपन और स्वादिष्ट व्यंजनों के लिए जाने जाते हैं। यहाँ तुम्हें पोहे, वड़ा पाव, पाव भाजी, पूरी भाजी, मिसल पाव और खास पूरन पोली तथा थालीपीठ

जैसे प्रसिद्ध व्यंजन मिलेंगे। मुम्बई की सड़कों से लेकर घरों तक, महाराष्ट्र का खाना हर किसी को पसंद आता है।

गुजरात की गुजराती थाली तो बहुत ही मशहूर है! इसमें तुम्हें ढोकला, थेपला, फाफड़ा, खांडवी, हांडवो, मोहनथाल और उंधियू जैसे कई व्यंजन एक साथ मिलेंगे। यहाँ के खाने में मीठे और खट्टे स्वाद का एक अद्भुत मेल होता है, जो इसे सबसे अलग बनाता है।

गोवा अपने समुद्री भोजन और पुर्तगाली असर वाले व्यंजनों के लिए जाना जाता है। गोवा की फिश करी, प्रॉन्स फ्राई, क्रैब करी, सोल कढ़ी (नारियल और कोकम से बनी) और पारम्परिक मिठाई बेबिंका यहाँ के खास व्यंजन हैं।

पूर्वी भारत का भोजन

पश्चिम बंगाल की रसोई अपने स्वादिष्ट मिठाइयों और मछली के व्यंजनों के लिए पूरी दुनिया में मशहूर है। माछ-भात (मछली और चावल) यहाँ का मुख्य भोजन है। इसके अलावा, शुक्तो (मिली-जुली सब्जियों का एक हल्का कड़वा व्यंजन), लूची (पूरी), छेना पायस, और विश्व प्रसिद्ध मिठाइयाँ जैसे नरम गरम रसगुल्ला और स्वादिष्ट मिष्टी दोई (मीठी दही) भी खूब पसंद की जाती है।

बिहार का भोजन अपनी सादगी और पौष्टिकता के लिए जाना जाता है। लिट्टी-चोखा तो यहाँ की पहचान है और यह पूरे देश में लोकप्रिय है! ठेकुआ (मीठे बिस्कुट), सत्तू, दाल-पूरी और चूड़ा-दही जैसे व्यंजन बिहार के हर घर में बड़े चाव से बनाए और खाए जाते हैं।

ओडिशा का भोजन अपनी सादगी और कम तेल-मसालों के इस्तेमाल के लिए खास है। यहाँ का दालमा (बिना तेल की दाल और सब्जी का मिश्रण), चेंचड़ा (मछली और सब्जियों का व्यंजन), स्वादिष्ट खीर, और पुरी के जगन्नाथ मंदिर का प्रसिद्ध महाप्रसाद (जिसे 'अभड़ा' भी कहते हैं) बहुत ही खास माना जाता है। छेना पोड़ (पनीर की सेंकी मिठाई) भी यहाँ की एक मशहूर मिठाई है।

झारखंड का भोजन यहाँ की आदिवासी संस्कृति और स्थानीय चीज़ों से प्रभावित है। यहाँ धुस्का (चावल और दाल के तले हुए पैनकेक), पिट्ठा (मीठे या नमकीन चावल के पकौड़े), और स्थानीय सब्जियों से बने व्यंजन जैसे रुगड़ा बहुत पसंद किए जाते हैं।

पूर्वोत्तर भारत के राज्यों (जैसे असम, नागालैंड, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम) के व्यंजनों में बाँस के कोपलों (बैम्बू शूट) का खूब इस्तेमाल होता है, जो इन्हें एक अनोखा स्वाद देता है। मोमोज़, थुक्पा (नूडल सूप), पोर्क करी (खासकर नागालैंड में) और भाप में पके व्यंजन यहाँ ज्यादा मिलते हैं। इन व्यंजनों में अक्सर कम तेल होता है और ये ताजी जड़ी-बूटियों और स्थानीय फसलों पर जोर देते हैं।

बच्चो, जब हम खाने की बात करते हैं, तो हमें यह भी याद रखना चाहिए कि हमारे देश में कुछ ऐसे भी लोग हैं जिन्हें एक समय का भरपेट भोजन भी मुश्किल से नसीब होता है। इसलिए, हमें कभी भी भोजन की बर्बादी नहीं करनी चाहिए। कहा जाता है कि केरल के महान "संत तिरुवल्लुवर" जब भोजन करने बैठते थे तो एक सुई और पानी का कटोरा साथ रखते थे, ताकि यदि अन्न का कोई दाना गिर जाए तो वे उसे सुई से उठाकर धोकर खा सकें।

बच्चो, देखा आपने! हर राज्य का खाना वहाँ की संस्कृति और परम्परा का हिस्सा है। भारतीय भोजन केवल पेट भरने का साधन नहीं, बल्कि विविधता में एकता का स्वाद भरा उदाहरण है। जरा सोचिए जब हमारे देश में ही स्वादिष्ट और पौष्टिक व्यंजनों का इतना बड़ा खजाना है, तो हमें जंक फूड और फास्ट फूड क्यों खाना! आइए हम सब मिलकर अपने देश के पारम्परिक और पोषक भोजन के स्वाद का आनंद लें और भारत को 'स्वस्थ भारत' बनाने की ओर कदम बढ़ाएँ। ❑

मादाम कामा

जर्मनी के स्टुटगार्ट नगर में 1907 की अंतरराष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन हो रहा था। उस सम्मेलन में एक भारतीय महिला मंच पर गईं और उसने पहली बार भारत का तिरंगा झंडा फहराया। इस झंडे को उन्होंने स्वयं ने तैयार किया था। यह हरे, पीले और लाल रंगों का था और उसके बीच में 'वंदे मातरम्' लिखा हुआ था। इस झंडे को फहराने के बाद उन्होंने यह प्रस्ताव रखा कि भारत में ब्रिटिश राज का जारी रहना भारत के सर्वोच्च हित के लिए निश्चित रूप से अपमानजनक और बहुत ही हानिकारक है और दुनिया के स्वतंत्रता प्रेमियों को चाहिए कि उस देश में रहने वाले मानवजाति के पांचवें भाग को मुक्त कराने में सहयोग दें क्योंकि आदर्श सामाजिक व्यवस्था की यह माँग है कि कोई भी जाति किसी तानाशाही या अत्याचारी सरकार के अधीन न रहे।

इस जोशीले भाषण के बाद उन्होंने यह नियम बना लिया कि वह जहाँ भी जातीं, भारत के राष्ट्रीय झंडे को अवश्य फहरातीं। भारत के आधुनिक इतिहास में वह पहली महिला थीं, जिन्होंने भारत की स्वाधीनता के लिए अपने को समर्पित कर दिया और उनके प्रशंसक और भक्त उन्हें 'भारतमाता' के रूप में याद करते थे।

श्रीमती कामा का जन्म मुम्बई (बम्बई) के एक धनी पारसी परिवार में 24 सितम्बर, 1861 को हुआ था और स्कूली शिक्षा के बाद उनका विवाह एक प्रसिद्ध विधिवेत्ता सॉलिसिटर भीखाजी रुस्तम कामा से हुआ। मादाम कामा की रुचि राजनीतिक उग्र विचारों की थी और इसके कारण पति-पत्नी की नहीं पटी और पाँच-छह वर्ष बाद उनका सम्बन्ध विच्छेद हो गया। इसके बाद ही 1898 में मुम्बई में बड़े जोर से प्लेग का प्रकोप हुआ। मादाम कामा ने एक स्वयंसेविका की भाँति लगन से रोगियों की सेवा की। सौभाग्य से वे इस बीमारी की चपेट में तो नहीं आईं, परंतु उनका पेट खराब हो गया और चिकित्सा कराने के लिए उन्हें विदेश जाना पड़ा। 1901 में वह चिकित्सा कराने के लिए पेरिस आईं। वहाँ स्वस्थ हो जाने पर वह सरदार सिंह राणा से श्यामजी कृष्ण वर्मा के लिए एक पत्र लेकर लंदन

पहुँची और वहाँ उनके दल में शामिल हो गईं। यहाँ उनका परिचय दादाभाई नौरोजी और लाला हरदयाल से भी हुआ। जब भारत में 1905 में क्रांतिकारी आंदोलन प्रबल हुआ तो उसकी गूँज यूरोप में भी सुनाई दी। इस समय मादाम कामा ने यह निश्चय किया कि वह भारत नहीं आएँगी और वहीं से ही देश की आजादी की लड़ाई के लिए काम करेंगी। उन्होंने यह घोषणा की कि जो भारतीय महिला राजनैतिक कार्यों के लिए विदेश आएगी, उसे वह एक हजार रुपये की छात्रवृत्ति देंगी और उन्होंने अपना सारा जीवन भारत माता की सेवा के लिए समर्पित कर दिया। जब वह ब्रिटेन में थीं, तो उन्होंने आयरलैंड, जर्मनी, रूस आदि देशों के देशभक्तों से सम्पर्क स्थापित किया। जब 1908 में लाला लाजपतराय और सरदार अजीत सिंह को देश निकाला देकर मांडले भेज दिया गया, तो उन्होंने लंदन के पत्रों में भारत सरकार की इस कार्रवाई पर कड़े कड़े लेख लिखे। इसके बाद ब्रिटिश सरकार की उन पर निगाह और भी कड़ी हो गई।

श्रीमती कामा ने जब वह ब्रिटेन में थीं, तो दादाभाई नौरोजी के ब्रिटिश संसद के लिए चुनाव में कठिन परिश्रम किया और दादाभाई ब्रिटिश संसद में चुने गए प्रथम भारतीय थे। वह अमरीका गईं और उन्होंने स्थान-स्थान पर भारत की स्थिति पर भाषण दिए। नवम्बर 1908 में वह पुनः लंदन लौटीं और उन्होंने अपने भाषणों की प्रतियाँ भारत भेजीं। उनका नारा था, "हम सब भारतीय हैं और भारतवर्ष भारतीयों के लिए है।" वह राष्ट्रीय एकता में विश्वास रखती थीं और उनका यह मत था कि किसी को भी कोई ब्रिटिश पद ग्रहण नहीं करना चाहिए चाहे वह कितना ही बड़ा क्यों न हो?

ब्रिटिश सरकार ने उन्हें फरार घोषित कर दिया और भारत में उनकी एक लाख रुपये की सम्पत्ति जब्त कर ली। जब प्रथम महायुद्ध हुआ तो ब्रिटिश सरकार के दबाव से फ्रांस की सरकार ने उन पर प्रतिबंध लगा दिया कि वह सप्ताह में एक बार पुलिस स्टेशन जाकर अपनी उपस्थिति की सूचना दें और उन्हें बाहर भेज दिया गया। वह बीमार पड़ गईं पर जैसे ही वह स्वस्थ हुईं, वैसे ही उन्होंने गुप्त रूप से 'गदर' की प्रतियाँ संसार के सभी भारतीय क्रांतिकारियों को भेजनी शुरू कर दीं। जब युद्ध समाप्त हो गया, तो उन्होंने फिर अपना पुराना कार्यक्रम जारी रखा। यद्यपि वृद्धावस्था में काफी अधिक सक्रिय आंदोलन नहीं कर सकीं परन्तु जब उनसे कहा गया कि अब वह भारत क्यों नहीं जातीं तो उन्होंने कहा, "मुझसे लिखित आश्वासन चाहते हैं और यह भी प्रतिज्ञा कराना चाहते हैं कि भविष्य में मैं राजनीति में भाग न लूँ जबकि मैं राजनीति में भाग लिये बिना नहीं रह सकती। मैं भारत जाकर सब जगह राजनीतिक सभाओं में भाषण देना चाहती हूँ।"

बाहर के पाँच वर्ष की नजरबंदी का उनके स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ा था और उनके अंतिम दिन बड़ी गरीबी और बीमारी में गुजरे। वह 1936 में मुम्बई लौटीं और उसी वर्ष वहीं उनका देहांत हो गया। कामा की प्रेरणा से न केवल पारसी महिलाओं को बल्कि समस्त भारतीय नारियों को स्वाधीनता संग्राम में सम्मिलित होने की प्रेरणा मिली। ❑

- प्रकाशन विभाग की पुस्तक 'आज़ादी क्रांतिकारी' से साभार

माथा-पच्ची

देवेंद्र पाल

द कॉमन रिंग

सोचो, क्या सकते हो कि इन चार किलों में कौन-सी एक बात समान है?

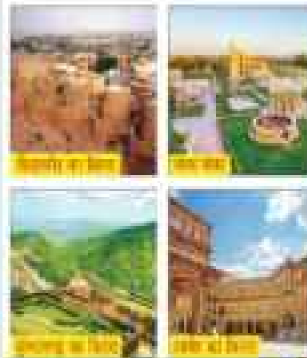

शब्द गोल

संकेत के आधार पर सही उत्तर लिखो। सभी शब्दों का आखिरी अक्षर 'र' होगा।

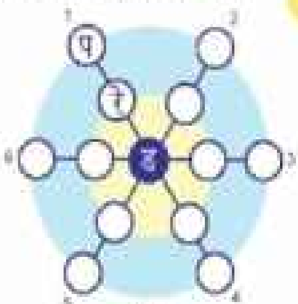

-संकेत-

1. जिस प्रतिमा है 28 ... की ...। 2. त्योहार। 3. ... 4. ... 5. ... 6. ...

शब्द जाल

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]

1. [illegible], 2. [illegible], 3. [illegible], 4. [illegible], 5. [illegible], 6. [illegible], 7. [illegible], 8. [illegible], 9. [illegible], 10. [illegible], 11. [illegible], 12. [illegible]

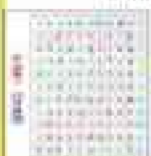

[illegible]

मानो बिल्ली, रानी बनी

-[illegible]

एक था राजा और एक थी रानी। रानी को बिल्ली पालने का बड़ा शौक था। उसकी बिल्ली का नाम था मानो। रोज जब रानी शृंगार करती, तो मानो उसके पास आ बैठती। मानो को पाउडर, तेल, सेंट आदि की महक बहुत अच्छी लगती। वह बड़े गौर से रानी का शृंगार देखती।

एक दिन मानो शृंगार के कमरे में अकेली थी। उसने सोचा मैं आज शृंगार करूँगी। उसने रानी की कंघी से सिर के बाल सँवारे। फिर मुँह में क्रीम और पाउडर लगाया। माथे पर बिन्दी लगाई और अब साड़ी पहनने

की बात सोचने लगी। रानी की साड़ी इतनी बड़ी थी कि वह उसे पहन नहीं सकती। अब क्या करे? वह सोचने लगी। सोचते-सोचते उसे एक तरकीब सूझी। उसने रानी का बड़ा-सा रेशमी रूमाल निकाला और उसकी साड़ी पहनी। फिर अकड़ कर बड़े शीशे के सामने खड़ी होकर अपना रूप देखने लगी।

इसी समय रानी अन्दर आई। उसने हँसते हुए कहा- "मानो यह क्या हो रहा है?"

मानो ने कहा- "चुप रहो। मैं रानी बन गई हूँ।"

रानी ने कहा- "ओह! यह बात है! अच्छा तो बताओ कि रानी किससे डरती है?"

मानो ने मूँछों पर पंजा फेरते हुए कहा- "किसी से नहीं।" रानी ने कहा- "तो तुम भी नहीं डरती।"

मानो ने कहा- "हाँ मैं भी नहीं डरती, मैं तो रानी हूँ, फिर क्यों डरूँगी? वह मेज पर घूमने लगी।

रानी हँसी। वह दरवाजे के पास गई, और, उसने धीरे से दरवाजा खोल कर टॉमी कुत्ते को बुलाया। टॉमी भौं-भौं करता हुआ कमरे में घुसा। उसे देखते ही मानो कूदकर खिड़की पर चढ़ गई।

रानी ने हँसकर कहा-

"मानो रानी डर गई, डर गई,
कुछ के ऊपर चढ़ गई, चढ़ गई।
टॉमी मेरा राजा, राजा
अच्छा मानो आना, आना।।"

मानो ने चिढ़कर कहा- "तुम बहुत बुरी हो रानी। मैं नहीं आऊँगी।"

रानी ने हँसकर कहा- "अच्छा अब आ जाओ। चलो मानो। हम दूध पीने जाएँगे।"

दूध का नाम सुनते ही मानो कूदकर रानी के कंधे पर बैठ गई। उसका सारा गुस्सा जाता रहा। रानी ने उसे गोद में उठा लिया। वह मानो और टॉमी को उनके खाने के कमरे में ले गई, और दोनों को दो चाँदी की रकाबी में दूध पिलाया। इसके बाद मानो फिर कभी रानी बनने न गई। जिसका काम उसी को साजे और करे तो मूरख बाजे। ❑

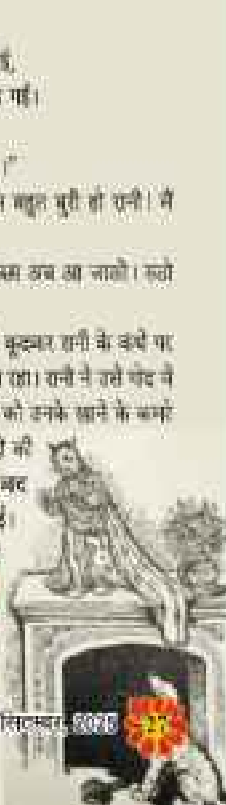

-'बाल भारती' अगस्त 1948 से साभार

चित्र बनाओ प्रतियोगिता

मैं और मेरी अध्यापिका

प्रथम विजेता, बुलबुल, ग्राम-[illegible], पो.-किला परीक्षितगढ़, मेरठ, उ.प्र. (इन्हें एक वर्ष तक बाल भारती की प्रतियाँ भेजी जाएँगी)

अंशिका, किला परीक्षितगढ़, मेरठ, उ.प्र.

[illegible], किला परीक्षितगढ़, मेरठ, उ.प्र.

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

उपरोक्त विषय पर इन बच्चों के भी चित्र प्राप्त हुए, इन्हें 'बाल भारती' की प्रति भेजी जा रही है।

नदियाँ सृजन का स्रोत

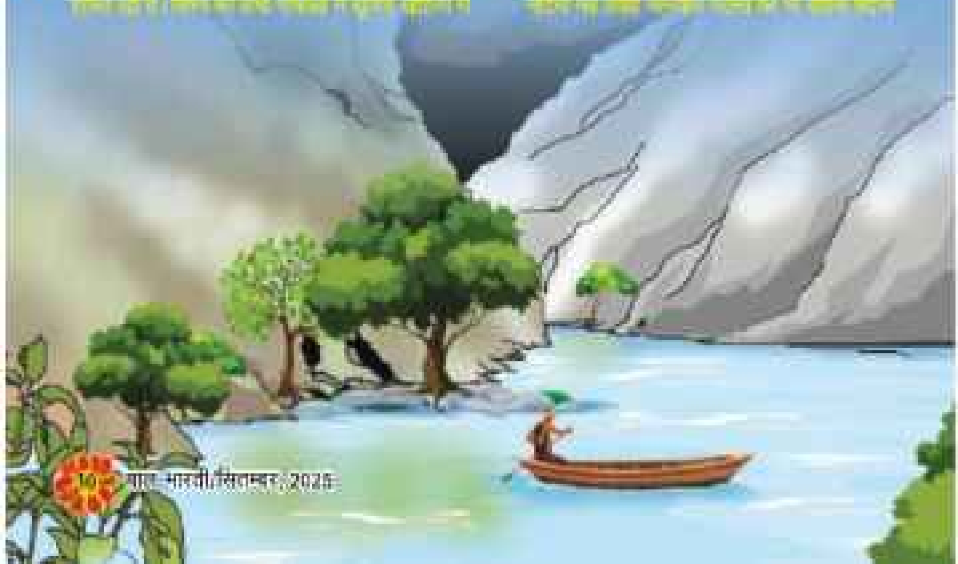

करने वाला रहा है। जिन प्राकृतिक प्रेरणाओं से मनुष्य ने कर्मठता का पाठ पढ़ा है, उनमें नदियों की भूमिका सर्वोपरि है। नदी का निरंतर बहना गतिशीलता का प्रतीक है। अनेक पहाड़ों को काटकर अग्रगामी होना उनकी संघर्ष यात्रा का ही परिणाम है। नदियाँ धैर्य की ध्वनियों को निरंतर अपनी गति-साधना में तब्दील करती रहती हैं। प्रत्येक विपरीत को साहस और धैर्य के साथ पार करना नदियाँ ही सिखाती हैं। मार्ग में कितने ही अवरोध क्यों न हों उन्हें पार करने के लिए व्यक्ति के भीतर यदि नदियों जैसा साहस और धैर्य है तो यह अवरोध मनुष्य की प्रगति में बाधक नहीं बन सकते हैं। नदियाँ मानवीय संवेदना को विकसित करती हैं, उन्हें उदार और सौन्दर्यमयी बनाती हैं। नदी की धारा को निहारना, उसके जल की शीतलता का स्पर्श करना, उसके सौंदर्य को निरखना मानवीय जीवन की विस्तृत कल्पना चेतना का ही विस्तार है। संवेदना और कल्पना का जो सर्वोत्तम विस्तार मानवीय मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में मिलता है वह नदियों के सतत सम्पर्क का ही परिवेश है। नदियाँ जिस तरह अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होकर अंततोगत्वा उसे प्राप्त करके ही रहती हैं, उसी तरह अपने लक्ष्य की प्राप्ति का भाव मनुष्य में संकल्प की तरह नदी-आचरण से ही आया है।

नदियों की बाढ़ भी मानवीय हित-रक्षा का संकल्प लेकर आती है। यद्यपि बाढ़ की विनाश-लीला भी कम नहीं है। अनेक नदियाँ अपनी बाढ़ से तबाही मचाने वाली हैं, लेकिन उनकी बाढ़ परोपकार की संवाहिका भी है। बाढ़ में धरती के कूड़ा-कचरे या भी अवांछित तत्वों का उच्छेदन हो जाता है। अपने अनेक पोषक खाई खंदकें, नाले पनाले में एकत्रित गंदगी का विसर्जन नदियों की बाढ़ के माध्यम से हो जाता है। बाढ़ सुविधा के लिए नदी द्वारा धारण किया रौद्र रूप है। बाढ़ के माध्यम से नदियाँ अपने किनारे कछारों में उर्वरा मिट्टी भी बहाकर लाती हैं। नदियों की बाढ़ खादरों के प्रयोग को श्रेष्ठ बनाती है। सोचिए यदि नदियाँ न होतीं तो वर्षा का जल एकत्रित होकर क्षेत्रीय जल-प्लावन की संहार कथाएँ न रच देता। यह तो नदियाँ ही हैं जिनके द्वारा जल का समुचित निष्कासन सम्भव होता है। नदियाँ अनेकानेक जल-स्रोतों को हरा-भरा बनाती हैं-कुआँ, तालाब, नहरें, सभी नदियों के कृतज्ञ हैं, ये जल स्रोत नदी से ही सञ्चित होते हैं। □

- 'प्रकाशन विभाग' की पुस्तक 'लोक में जल' से साभार

दियासलाई

इंग्लैंड का एक व्यापारी जॉन वॉकर तरह-तरह के रासायनिक पदार्थ बेचने के अलावा तरह-तरह के प्रयोग भी करता रहता था। एक दिन उसने कुछ रासायनिक पदार्थों का घोल तैयार किया तथा उसे लकड़ी से चलाने लगा।

बीच में उसे कोई दूसरा काम ध्यान आया और वह उसमें जुट गया। वह हाथ में लकड़ी लिए दूसरा काम करने लगा। तब उसे ध्यान आया कि हाथ में बेकार लकड़ी है तो उसने वह लकड़ी फेंक दी पर वह पत्थर से टकराते ही चट्-चट् करके जलने लगी।

जॉन वॉकर को पहले तो समझ में नहीं आया। बाद में दिमाग पर काफी जोर डालने पर उसे याद आया कि उस लकड़ी पर घोल लगा था। अब उसकी प्रसन्नता का ठिकाना नहीं रहा क्योंकि उसे तो आग जलाने का आसान और सुरक्षित तरीका मिल गया था। उसने छोटी-छोटी लकड़ी की तीलियाँ लीं और उन पर घोल लगाया। अब वह उन्हें रेगमाल से रगड़कर जलाने लगा। 1827 में हुई इस घटना ने दैनिक जीवन पर गहरा असर डाला क्योंकि इससे पूर्व अठारहवीं सदी में जो दियासलाई तैयार की गई थी, उसे जलाने में काफी खतरा रहता था।

बाद में जॉन वॉकर की दियासलाई में और सुधार किए गए तथा रेगमाल के इस्तेमाल की जगह दियासलाई की डिबिया के दोनों ओर फास्फोरस का घोल लगाया जाने लगा। अब इस जगह रगड़ने से दियासलाई जल उठती थी।

पर खतरा अब भी था क्योंकि डिबिया में रखे-रखे दियासलाई आपस में रगड़ खाकर भी जल उठती थी। बाद में लाल फास्फोरस का इस्तेमाल करके यह खतरा भी दूर कर दिया गया और माचिस का नाम सेफ्टी माचिस रख दिया गया। धीरे-धीरे माचिस की नई-नई फैक्टरियाँ खुलने लगीं। अब तीलियों को मोम में डुबाया जाने लगा ताकि वे जल्दी आग पकड़ें। इस काम के लिए मशीनें भी तैयार कर ली गईं। ❑

– 'प्रकाश मिश्रा' की पुस्तक
'आओ आविष्कारक बनें' से साभार

शतरंज का दिव्य सितारा

दिव्या देशमुख ने जॉर्जिया में आयोजित महिला शतरंज विश्व कप का खिताब जीतकर इतिहास रच दिया। वह मात्र 19 वर्ष की हैं और भारत के लिए यह खिताब जीतने वाली पहली महिला हैं। दिव्या के लिए यह खिताब इसलिए भी अहम है कि उन्होंने अपने से दुगनी उम्र की कोनेरु हम्पी को हराकर इसे जीता है। इस खिताब की जीत से वह ग्रैंडमास्टर बनने वाली भारत की चौथी महिला खिलाड़ी बन गई हैं।

दिव्या के शतरंज खिलाड़ी बनने की कहानी बहुत दिलचस्प है। दिव्या अपनी बड़ी बहन के साथ बैडमिंटन कोर्ट में जाती थी लेकिन कद छोटा होने के कारण नेट तक नहीं पहुंच पाती। इसी कारण उसी कोर्ट में स्थित एक हॉल में शतरंज के मैच को देखने में उनको मजा आने लगा। उनके इस शौक को देखकर उनके माता-पिता ने उन्हें शतरंज अकादमी में रजिस्ट्रेशन करा दिया। दो साल के ट्रेनिंग के बाद दिव्या 2012 में पुडुचेरी में राष्ट्रीय शतरंज में अंडर-7 का राष्ट्रीय खिताब जीती। इसके बाद दिव्या हमेशा आगे ही बढ़ती गईं। 2020 में ओलंपियाड टीम की विजेता सदस्य बन गईं और उनकी गिनती देश की दिग्गज खिलाड़ियों में होने लगी। अब वह शतरंज में नया सितारा बनकर चमक रही हैं। □

राज्यों द्वारा अनुमोदन

संविधान के कुछ अनुच्छेदों में संशोधन करने के लिए विशेष बहुमत पर्याप्त नहीं होता। राज्यों और केंद्र सरकार के बीच शक्तियों के वितरण से सम्बंधित या जन प्रतिनिधित्व से सम्बंधित अनुच्छेदों में संशोधन करने के लिए राज्यों से परामर्श करना और उनकी सहमति प्राप्त करना आवश्यक होता है। संघीय संरचना का अर्थ यह है कि राज्यों की शक्तियाँ केंद्र सरकार की दया पर निर्भर नहीं करतीं। संविधान में राज्यों की शक्तियों को सुनिश्चित करने के लिए यह व्यवस्था की गई है कि जब तक आधे राज्यों की विधान पालिकाएँ किसी संशोधन विधेयक को पारित नहीं कर देतीं तब तक वह संशोधन प्रभावी नहीं माना जाता। इस अर्थ में यह कहा जा सकता है कि संविधान के कुछ हिस्सों के बारे में राजनीति में एक व्यापक सहमति की अपेक्षा की जाती है। इस प्रावधान में राज्यों के अधिकारों को भी जगह दी गई है। इसके अंतर्गत राज्यों को संशोधन की प्रक्रिया में भाग लेने का अधिकार दिया गया है। उल्लेखनीय है कि संशोधन की प्रक्रिया के कठोर होने के बावजूद उसे फिर भी काफी हद तक लचीला बनाया गया है। हम देख सकते हैं कि संशोधन के लिए केवल आधे राज्यों के अनुमोदन और राज्य विधानपालिकाओं के साधारण बहुमत की आवश्यकता होती है। इस प्रकार देखा जा सकता है कि शर्तों की कठोरता के बावजूद संशोधन करने की प्रक्रिया अव्यावहारिक नहीं है। संक्षेप में, भारतीय संविधान में संशोधन करने के लिए व्यापक बहुमत की आवश्यकता पड़ती है। इस प्रक्रिया में राज्यों को सीमित भूमिका दी गई है। हमारे संविधान निर्माता इस बात को लेकर सचेत थे कि संविधान में संशोधन की प्रक्रिया को इतना आसान नहीं बना दिया जाना चाहिए कि उसके साथ जब चाहे छेड़छाड़ की जा सके। लेकिन साथ ही उन्होंने इस बात का ख्याल भी रखा कि भावी पीढ़ियाँ अपने समय की ज़रूरतों के हिसाब से इसमें आवश्यक संशोधन कर सकें।

संशोधनों की श्रेणी

अब तक किए संशोधनों को तीन श्रेणियों में बाँटा जा सकता है। पहली श्रेणी में वे संशोधन शामिल किए गए हैं जो तकनीकी या प्रशासनिक प्रकृति के हैं और वे संविधान के मूल प्रावधानों को स्पष्ट बनाने, उनकी व्याख्या करने तथा छिट-पुट संशोधन से सम्बंधित हैं। इन्हें केवल तकनीकी भाषा में संशोधन कहा जा सकता है। वास्तव में वे इन उपबंधों में कोई विशेष बदलाव नहीं करते।

उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की सेवानिवृत्ति की आयु सीमा को 60 वर्ष से बढ़ाकर 62 वर्ष (15वाँ संशोधन) करना और इसी प्रकार, सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों का वेतन बढ़ाने सम्बंधी संशोधन (54वाँ संशोधन) इस बात के उदाहरण हैं।

मन जिसका मजबूत : अद्भुत बालक अष्टावक्र

डॉ. शुभंकर मिश्र
लेखक, विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस में
पूर्वकालिक भारत सरकार के प्रतिनिधि

नन्हे दोस्तो! हम सब जानते ही हैं कि प्राचीन भारत ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में काफी आगे था। इनके बारे में जानना-समझना हम सबके लिए बेहद रोचक हो सकता है। इस कड़ी में हम जानेंगे प्राचीन वैज्ञानिकों को और इनके माध्यम से जानेंगे अपनी थाती एवं संस्कृति को।

हम सभी की यह कोशिश रहती है कि हम सुंदर दिखें, खूबसूरत रहें और लोग हमें खूब पसंद करें। यह स्वाभाविक भी है, क्योंकि समाज में अच्छा दिखने और दूसरों से सराहना पाने से हमें खुशी मिलती है। पर, हमें यह बात कभी नहीं भूलनी चाहिए कि शारीरिक ताकत, सुंदरता या धन से भी बड़ी एक और ताकत होती है, वह है हमारे मन की शक्ति, यानी हमारा आत्मविश्वास। आत्मविश्वास दरअसल एक ऐसी शक्ति है, जो हमें मुश्किल-से-मुश्किल समय में भी डगमगाने नहीं देती।

प्राचीन भारत की एक ऐसी ही प्रेरणादायक कहानी, ऋषि अष्टावक्र के बारे में है, जो हमें यह सिखाती है कि यदि हमें स्वयं पर भरोसा हो, तो शरीर की कमजोरियाँ, हमें आगे बढ़ने से कदापि नहीं रोक सकतीं।

आज से लगभग 1500 ईसा पूर्व से 600 ईसा पूर्व के बीच की बात है। यह वह कालखंड था, जब प्राचीन भारत में वेदों और उपनिषदों जैसे महत्वपूर्ण दार्शनिक ग्रंथों की रचना हुई थी। माना जाता है कि इसी काल में अष्टावक्र नामक एक ऋषि हुए, जो वेदों और उपनिषदों के परम

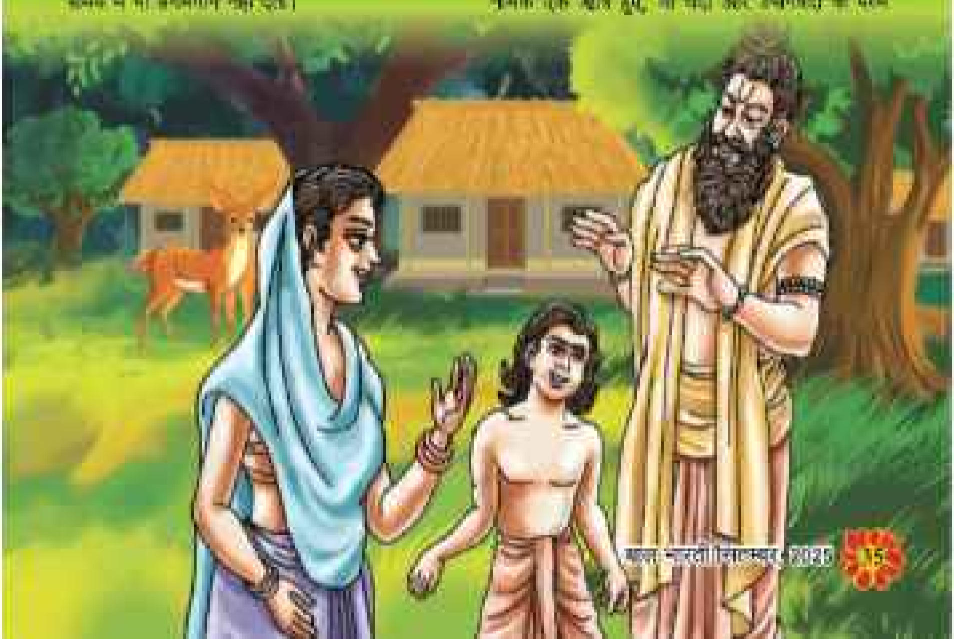

ज्ञात थे। ऋषि अष्टावक्र के जन्मस्थान को लेकर, जो कथा सबसे अधिक मान्य है, वह यह है कि वे भारत के विदेह राज्य से सम्बंधित थे। विदेह राज्य की राजधानी मिथिला थी, जो आज के उत्तर बिहार और नेपाल के कुछ हिस्से में स्थित है। उल्लेखनीय है कि उस समय विदेह राज्य वैदिक सभ्यता का एक उन्नत केंद्र था, जहाँ दर्शन, शिक्षा, विवेक और तर्क की महान शिक्षा दी जाती थी।

बताना चाहूँगा कि अष्टावक्र एक विशिष्ट बालक के रूप में ऋषि कहोड़ और सुजाता के घर जन्मे थे, मगर गौरतलब है कि वे जन्म से ही दिव्यांग थे। उनका शरीर आठ स्थानों पर वक्र, यानी टेढ़ा-मेढ़ा था। 'अष्टावक्र' नाम का अर्थ ही है- 'आठ वक्रताओं (टेढ़े-मेढ़ेपन) वाला'। इसी कारण समाज में यह बालक 'अष्टावक्र' के नाम से पुकारा गया। कहना नहीं होगा कि टेढ़े शरीर के साथ जन्म लेने के कारण अष्टावक्र को समाज में प्रायः तिरस्कार और हँसी का सामना करना पड़ा। पर ध्यान देने की बात यह है कि बालक अष्टावक्र ने कभी इसे अपनी कमजोरी नहीं बनने दिया, बल्कि ज्ञान, साधना और आत्मबल को ही अपनी असली पूँजी माना। यही उन्हें विशिष्ट बनाती चली गई और अपने ज्ञान के बूते वे प्राचीन भारत के इतिहास में अमर हो गए। बालक अष्टावक्र का जीवन इस बात का प्रमाण है कि यदि हमारा मनोबल ऊँचा हो, तो हमें सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ने से कोई रोक नहीं सकता।

बचपन से ही अष्टावक्र अत्यंत बुद्धिमान, शांत और चिंतनशील स्वभाव के थे। माना जाता है कि वे माँ के गर्भ से ही वेदों के ज्ञाता थे। इसी संदर्भ में एक प्रसिद्ध कथा है कि जब उनके पिता कहोड़ वेद मंत्रों का उच्चारण कर रहे थे, तो अष्टावक्र ने गर्भ में रहते हुए ही उनकी गलतियों को सुधार दिया था। यह कथा प्रतीकात्मक रूप में यह संकेत करती है कि अष्टावक्र एक असाधारण प्रतिभा के धनी थे।

वर्णन मिलता है कि अष्टावक्र अपने नाना उद्दालक और मामा श्वेतकेतु के साथ पले-बढ़े थे। वे दोनों वेद और ज्ञान

का अध्ययन साथ-साथ किया करते थे। एक अन्य श्रुति के अनुसार, उनके पिता कहोड़ मिथिला के राजा जनक के दरबार में शास्त्रार्थ में पराजित हो गए थे और उन्हें कारावास में डाल दिया गया था। जब अष्टावक्र को दस वर्ष की अवस्था में यह ज्ञात हुआ कि उनके पिता राजा जनक द्वारा बंदी बनाए गए हैं, तो उन्होंने निश्चय किया कि वे अपने पिता को इस बंधन से मुक्त कराएँगे।

बालक अष्टावक्र अपने पिता को मुक्त कराने के उद्देश्य से मिथिला के राजा जनक के दरबार में पहुँचे। वहाँ सभा में उपस्थित विद्वानों को उन्होंने शास्त्रार्थ की चुनौती दी, किंतु सभा के लोग उनके टेढ़े-मेढ़े शरीर को देखकर उपहास करने लगे। कहा है कि सभासदों के इस व्यवहार से बिना विचलित हुए, वह बालक शांत स्वर में बोल उठा, "यह कैसी सभा है, जो शरीर की आकृति देखकर किसी की योग्यता का मूल्यांकन करती है? व्यक्ति का शरीर महत्त्वपूर्ण है या उसका चरित्र?" इस बालक के मुख से ये वचन सुनते ही सभा में मौन छा गया। रोचक बात यहीं पर है कि शास्त्रार्थ में सभा के सभी विद्वान, उस क्षण उस बालक की विलक्षण प्रतिभा के आगे पराजित हो गए थे। राजा जनक इस बालक की विलक्षण प्रतिभा से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके और उनसे ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न पक्षों पर गहन चर्चा करने लगे। राजा जनक स्वयं एक ज्ञानी, विवेकी और न्यायप्रिय शासक थे। अष्टावक्र के ज्ञान से वे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उसे अपना गुरु स्वीकार कर लिया।

राजा जनक और बालक अष्टावक्र के बीच का यह संवाद 'अष्टावक्र गीता' के नाम से संकलित है, जिसे ज्ञान-विज्ञान के इतिहास में एक मील का पत्थर माना जाता है। अद्वैत वेदांत दर्शन के सिद्धांतों पर आधारित इस ग्रंथ का मुख्य उद्देश्य आत्म-निरीक्षण करना, सोचने-समझने की शक्ति को विकसित करना और अपनी असली क्षमताओं को पहचानना है। यह जानना ज़रूरी है कि 'अद्वैत वेदांत' प्राचीन भारत की एक प्रमुख दर्शन-शाखा है, जो मोटे तौर पर हमें यह सिखाती है कि सच्ची खुशी और शांति बाहर नहीं, बल्कि हमारे भीतर ही विद्यमान है। इसके लिए आवश्यक है कि हम 'मैं' और 'तुम' जैसी भेदभावपूर्ण सोच को त्यागें और आत्मबल को मज़बूत करें।

प्राचीन भारत के ज्ञान-विज्ञान के इतिहास में ऋषि अष्टावक्र ने जीवन, आत्मा और ज्ञान के बारे में गंभीर चिंतन किया है। उनका दर्शन मुख्यतः उपनिषदों और वैदिक शिक्षाओं से जुड़ा हुआ है। उनका मानना था कि सच्चा ज्ञान, वस्तुतः मन और आत्मा की समझ से ही आता है, शरीर के बाहरी दिखावे से नहीं। आज के युग में, जब लोग प्रतिस्पर्धा और मानसिक तनाव से परेशान हैं और अक्सर अपनी कमजोरी व अभाव को लेकर संताप में पड़ जाते हैं, तब अष्टावक्र गीता की सीख हमारे लिए विशेष उपयोगी हो जाती है। यह हमें इस बात का स्मरण दिलाती है कि हमारी असली पहचान शरीर, पद या नाम में नहीं, अपितु सच्चे ज्ञान के अर्जन में है।

अष्टावक्र ने अपनी दिव्यांगता के बावजूद, दृढ़ इच्छा से अपने जीवन में नई ऊँचाइयों को छुआ। उन्होंने इसे अपनी कमज़ोरी नहीं, बल्कि ताकत बनाया। उनकी यह बात हमें यह सिखाती है कि यदि हमारा मन अडिग हो, तो हमें अपनी मंज़िल तक पहुँचने से कोई नहीं रोक सकता।

ऋषि अष्टावक्र का जीवन हम सभी को यह संदेश देता है कि हमें आलोचनाओं, असफलताओं और चुनौतियों का सामना पूर्ण आत्मविश्वास के साथ डटकर करना चाहिए। निस्संदेह, ऋषि अष्टावक्र ने हमें इस संसार को देखने की एक नई दृष्टि प्रदान की। उनका आत्मबल इतना प्रबल था कि राजा जनक जैसे विद्वान भी उनके शिष्य बन गए थे।

ऋषि अष्टावक्र की कहानी हमें यह सिखाती है कि मज़बूत मन वही होता है, जो कठिनाइयों में भी मुस्कुराता रहता है और अपना आत्मबल बनाए रखता है। 'मन जिसका मज़बूत, वही सच्चा विजेता है।' ❑

सही निर्णय

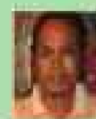

दिनेश विजयवर्गीय
[illegible]

शुभ मंगल कॉलोनी के पार्क में लम्बी प्रतीक्षा के बाद बाउंड्री वॉल बनी थी। लोगों के घूमने के लिए यहाँ वॉकिंग ट्रैक भी बनी जिसमें आसपास के लोग सुबह-शाम घूमने आने लगे। बच्चों को भी खेल कूदने के लिए कुछ स्थान मिल गया। पार्क में वृक्षारोपण होने से यहाँ हरा-भरा वातावरण बनने लगा था। सामाजिक संस्थाओं ने लोगों के विश्राम करने के लिए बेंच लगा दी।

अभी पार्क में विकसित करने की योजना चल ही रही थी कि नगर परिषद ने यहाँ एक स्मारक बना दिया। इसके चलते पार्क में होली, नवरात्रि, दशहरा तथा छोटे सामाजिक कार्यक्रम बंद हो गए। बच्चों के खेलने की जगह भी सीमित हो गई। अब वे छोटी जगह में क्रिकेट खेलने लगे।

क्रिकेट खेलते उनकी गेंद कई बार पार्क की बाउंड्री को पार कर सामने वाले घर तक पहुँच जाती। जिन घरों में पहुँचती है वह उन्हें गेंद को बाउंड्री तक सीमित रखने को कहते। पर खेलने के उत्साह में बच्चे सब कुछ भूल जाते। ऐसा कई बार होता।

एक दिन शाम को बच्चे क्रिकेट की नई गेंद से बड़े उत्साह से खेल रहे थे। अभी खेलते कुछ समय ही हुआ था कि गेंद बाउंड्री पार कर सामने

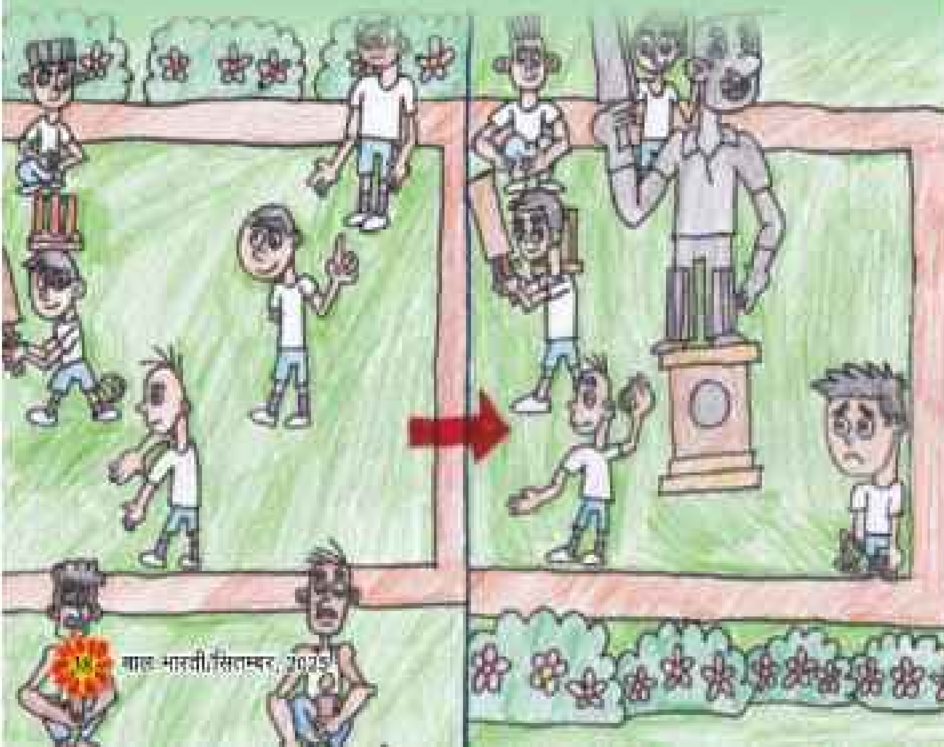

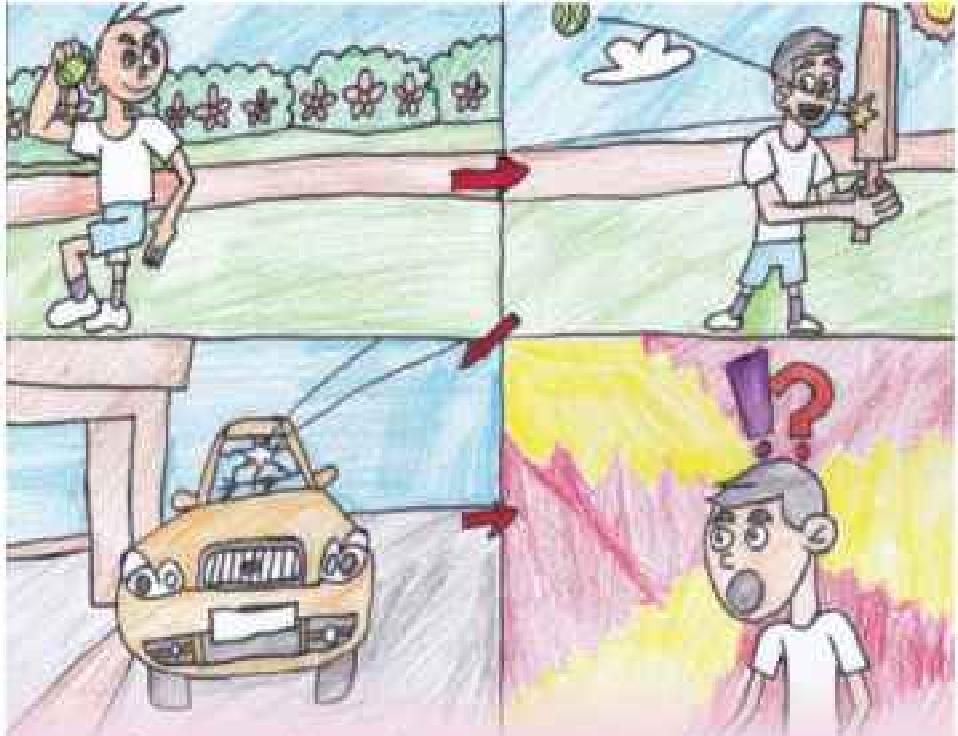

मकान के बाहर खड़ी कार के गेट के काँच से टकरा गई। पल भर में काँच टूट गया।

डीबी ने जब अपनी कार के टूटे हुए काँच को देखा तो दुखी होकर रह गए। मन में बच्चों पर गुस्सा आया। कई बार चेताया था, पर माने नहीं। उन्होंने बच्चों से पूछा 'किसने तोड़ा यह काँच?' पर बोला कोई नहीं। आखिर डीबी ने उनसे कहा। "तुम्हें कई बार समझाया कि पार्क छोटा है। यदि क्रिकेट शौक खेलना है तो किसी बड़े मैदान में खेलो।" वह दुखी हो गए। बच्चों को भी यह एहसास हुआ कि जो हुआ वह ठीक नहीं हुआ। सब खेल बंद कर घर चले गए।

खेलने वालों में निखिल का मन बेचैन हो रहा था। गेंद उसके बल्ले के प्रहार से ही बाउंड्री पार करके कार की काँच पर पड़ी और, वह पल भर में टूट गया। भले ही किसी ने उसका नाम उजागर नहीं किया। पर उसका मन अपराधी सा हो रहा था। वह सोचने लगा कि डीबी अंकल कैसे दुखी हो रहे थे। पता नहीं नया काँच लगाने में उन्हें कितने रुपए खर्च करने होंगे। वह यही सब सोचता रहा। उसे रात को देर तक नींद नहीं आई।

उसने दूसरे दिन अपने साथ खेलने वाले साथियों के बीच अपने अपराधी मन की उथल-पुथल वाली बात कही। "मैं अपना अपराध स्वीकार कर अंकल से माफी माँग लेता हूँ।" निखिल की बात सुनकर सोमेश ने कहा "तू मूर्ख हो रहा है क्या? अभी तक तो डीबी अंकल को पता ही नहीं किसने तोड़ा। अगर आगे होकर उनसे कहोगे तो हो सकता था तेरे पापा से नुकसान की भरपाई के लिए रुपये माँगने लग जाएँ। ऐसे में तुम्हें पापा की नाराजगी भी झेलनी पड़ेगी।" दिवाकर ने भी निखिल की बात सुनकर कहा

कि "बैटे वाले आ बैठ मुझे मार। रहने दे भैया, सब चुप्पी साध ले। वैसे श्रीजी अंकल भी यह मान गए होंगे कि जान बूझकर कोई काँच पर प्रहार थोड़े ही किया है। खेल में गेंद अक्सर टकराती होगी।" कौशल बोला "भैया देखो, सब सुन लो ध्यान से बात। सच्ची बात यह है कि हुआ सो हुआ। सब हम यह निर्णय लेंगे कि अब से यहाँ की छोटी जगह पर नहीं खेलें, पास वाले स्कूल के मैदान में खेलेंगे।" "इससे हमारा खेल भी पूरे खुले रूप से चल सकेगा और आसपास वालों को भी कोई नुकसान नहीं होगा।" कौशल की बात का सभी ने समर्थन किया। पर निखिल का मन तो पता नहीं अभी भी क्यों अपराध भावना से जकड़ा हुआ है। उसने तो अपने ऊपर अपराधी बोझ से मुक्ति पाने के लिए श्रीजी अंकल से माफी माँगना जरूरी समझा।

सुबह जब श्रीजी घर के बरामदे में बैठे अखबार पढ़ रहे थे। तभी निखिल गेंद लेकर उनके पास गया। नमस्कार कर बोला "अंकल! मुझे माफ कर दो। कल मेरे द्वारा खेली गई गेंद के प्रहार से ही काँच टूटा था। कल किसी ने मेरा नाम बताया नहीं। लेकिन घर पर जाकर मैं बेचैन होता रहा। मेरा किसी में मन नहीं लग रहा था। मैंने अच्छा यही समझा कि अंकल के पास जाकर, अपना अपराध स्वीकार कर, माफी माँग लूँ। और हम सब ने यह निर्णय लिया है कि अब से यहाँ नहीं खेलेंगे, ताकि जिससे भविष्य में कोई अप्रिय हादसा न हो।"

"बेटा! सच में तुम बहुत अच्छे बच्चे हो, जिसने बड़ी शालीनता से अपना अपराध स्वीकार किया। और तुमने जो निर्णय लिया है वह भी बहुत सही एवं प्रशंसनीय है। अब निखिल के मन से अपराध बोध का बोझ उतर गया था। वह खुश था कि अंकल ने उससे कुछ नहीं कह कर प्यार से बात की। ❑

ओ गौरैया आओ न

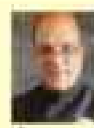

सतीश उपाध्याय
मनेन्द्रगढ़ (कोरिया)

घर तो है, पर आँगन सूना
ओ! गौरैया आओ न।
यहीं बना लो एक घोंसला
तिनका-तिनका लाओ न।
चहक तुम्हारी, सुनने खातिर
दाना लेकर आया हूँ।
फुदको आकर डाली-डाली
सुंदर पेड़ लगाया हूँ।
यहीं बना लो, एक घोंसला
फिर रौनक आ जाएगी।
तुम आओगी चिड़िया रानी
तो खुशियाँ भी आएँगी।

घर-आँगन भी महक उठेगा
गीत खुशी के गाएँगे।
चीं-चीं कर तुम शोर मचाना
आँगन तुम्हें बुलाते हैं।
रोज तुम्हारे लिए तो देखो
दाना पानी लाते हैं।
जो पेड़ हैं, बड़े उदास
वे भी खुश हो जाएँगे।
तुम रहोगी, पत्ते-पत्ते
खुशियों से फूल खिलाएँगे।।

प्रकृति की सच्ची मित्र

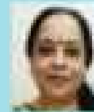

रंजना मिश्रा
स्वतंत्र लेखिका

हरिपुर एक छोटा, लेकिन समृद्ध गाँव था, जहाँ लोग कृषि, मछली पालन, और फूलों के बगीचों से अपनी जीविका चलाते थे। गाँव की सड़कें मिट्टी से बनी थीं, खेतों में सरसों और गेहूँ की फसल हरी-भरी लहराती, और लोग सुबह-सुबह उठकर हल चलाते या दुकानें खोलते। उसी गाँव की एक जिज्ञासु और जिम्मेदार लड़की अनाया अपने माता-पिता के साथ रहती थी। अनाया का मन हमेशा कुछ नया सीखने और करने की चाह से भरा रहता था। एक गर्मियों की सुबह अनाया नदी किनारे पहुँची जहाँ वह अक्सर पक्षियों के गीत सुनती और कुम्हार महिलाएँ मिट्टी के बर्तन बनातीं और उन्हें पारम्परिक डिजाइनों से सजाती दिखतीं। नदी का पानी कल-कल बहता रहता, लेकिन उस दिन उसने देखा कि पानी के बीच-बीच में प्लास्टिक की थैलियाँ तैर रही हैं। थैलियाँ सफेद, नीले और काले रंग की थीं। अनाया ने झुंझलाकर पानी से एक थैली निकाली और पास खड़े लोगों की ओर देखा, जहाँ काम कर रहे कुछ लोग बिना सोचे-समझे थैलियाँ फेंक रहे थे। अनाया के मन में सवाल उठा- "क्या इससे हमारे गाँव के बहते पानी का स्रोत सूख या प्रदूषित नहीं हो जाएगा?" उसने ठान लिया कि वह गाँव वालों को जागरूक करेगी। लेकिन पहले उसे यह समझना था कि आखिर लोग कूड़ा नदी में क्यों फेंकते हैं?

घर लौटकर अनाया ने अपनी

किया, जिसका नाम था, 'स्वच्छ नदी, स्वस्थ जीवन'। अनाया ने स्कूल के विद्यार्थियों को समूहों में बाँट कर नदी किनारे सफाई करने की जिम्मेदारी दी। प्रत्येक समूह को कूड़ा इकट्ठा करने, अलग-अलग गोदाम में रखने और उससे खाद बनाने की जानकारी दी। कुछ दिनों में ही बच्चों ने नदी किनारे से सैकड़ों कपड़े, कागज और प्लास्टिक जमा किए। गाँव के प्रधान जी भी इस पहल से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने पंचायत में घोषणा की, "हमारी अगली बैठक में तय होगा कि कोई भी प्लास्टिक थैली गाँव में नहीं बेची जाएगी। जो बेचेगा, उस पर जुर्माना लगेगा।" अनाया ने पंचायत में अपने भाषण में कहा- "हम सब जानते हैं कि नदी हमारे जीवन का स्रोत है, पीने का पानी, खेतों में सिंचाई, मछलियों की समृद्धि। प्लास्टिक से नदियाँ दूषित होती हैं और हमारी जमीन भी। इसलिए हमें अब 'प्लास्टिक मुक्त गाँव' बनाना है।" सभी ने तालियाँ बजाईं और अगले हफ्ते से प्लास्टिक पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध लगा दिया गया। गाँव वालों ने पुरानी थैलियाँ इकट्ठा करके एक सामूहिक केंद्र स्थापित किया, जहाँ इन थैलियों को रिसाइकल किया जाता और जगदानंद पंसारी को कपड़े के थैलों के लिए मुफ्त में कच्चा माल और प्रशिक्षण दिया जाता। अनाया के पिता ने किसानों को जैविक खेती के तरीके सिखाए, जिससे मिट्टी की उर्वरता बनी रहे और जल स्तर स्थिर रहे। एक महीने में ही हरिपुर गाँव का दृश्य बदल गया। नदी का पानी साफ, खेत हरे-भरे और हवा ताजी हो गई। बच्चे नहाने आने लगे, मछलियाँ लौट आईं और पक्षियों के स्वर फिर से गूँजने लगे। गाँव के प्रवेश द्वार पर लिखा गया, "स्वागत है प्लास्टिक मुक्त हरिपुर में।"

इस बीच अनाया ने सुबह-शाम नदी किनारे जाकर पानी का स्तर मापना शुरू किया। उसने नोट किया कि मानसून के बाद नदी का जलस्तर गिरता है, यह भी पर्यावरण पर ध्यान देने का विषय था। उसने ग्रामीणों के साथ मिलकर जल संरक्षण पर कार्यशाला आयोजित की, जिसमें तालाबों की सफाई, खेत के बाँध बनाना और वर्षा जल संचयन तकनीकें सिखाईं। पशुओं के गोबर से 'जैव गैस' योजना लागू हुई, जिससे घरों को गैस ईंधन मिला और गोबर का भी सदुपयोग हुआ। इस सबसे अनाया ने जाना कि जागरूकता ही सबसे बड़ी ताकत है। उसने गाँव के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में नाटक, गीत और कविता के माध्यम से पर्यावरण संदेश फैलाया। बच्चों ने मंच पर एक छोटी नाटिका पेश की, जिसमें दिखाया गया कि प्लास्टिक मुक्त जीवन कैसा होता है। बड़े-बुजुर्गों ने भी 'स्वच्छ गाँव, स्वच्छ जीवन' पर आधारित होकर गीत गाया। कुछ महीनों बाद राज्य सरकार ने हरिपुर गाँव को 'हरित ग्राम पुरस्कार' से सम्मानित किया। अनाया गाँव के चौपाल में खड़ी मुस्कुरा रही थी। वह बोली- "यह पुरस्कार हमारी सभी की मेहनत और संकल्प की देन है। हमारी सच्ची प्रतिबद्धता ने हमारे गाँव को नई पहचान दी है।" समापन के अवसर पर स्कूल में समारोह आयोजित किया गया, जहाँ अनाया को 'प्रकृति की सच्ची मित्र' का पदांकित प्रमाण-पत्र दिया गया। सभी ने कहा- 'एक छोटा प्रयास भी बड़ी लहर पैदा कर सकता है, बस हमें मिलकर काम करना है।' इस तरह अनाया ने अपने समर्पण और सहयोग से हरिपुर गाँव को प्रकृति का सच्चा मित्र बनाया। आज भी हरिपुर में साफ नदी, हरे खेत और खुशहाल परिवार इसी संदेश की गवाही देते हैं। ❑

विश्व ओज़ोन दिवस पर विशेष

ओज़ोन परत का संरक्षण है जरूरी

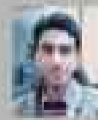

प्रत्यूष शर्मा
युवा लेखक

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

उष्णकटिबंधीय ओज़ोन परत भी पतली हो रही है, जिससे वैज्ञानिक समुदाय में खास छिद्र गई है। एक हालिया अध्ययन में दावा किया गया है कि उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों ने 30 डिग्री दक्षिण से 30 डिग्री उत्तर अक्षांश पर एक नया ओज़ोन छिद्र पाया गया है। ओज़ोन परत समताप मंडल की एक परत है, जो पृथ्वी के वायुमंडल की दूसरी परत है। समताप मंडल हमारे ग्रह से चिपके हुए सुरक्षात्मक गैसों का द्रव्यमान है।

ओज़ोन परत पृथ्वी के वायुमंडल में (पृथ्वी से 15-35 किमी ऊपर) समताप मंडल के निचले हिस्से में मौजूद है और इसमें ओज़ोन की सांद्रता अपेक्षाकृत अधिक है। ओज़ोन परत सामान्यतः तब विकसित होती है जब कुछ प्रकार के विद्युत निर्वहन या विकिरण ऑक्सीजन अणु में 2 परमाणुओं को विभाजित कर देते हैं, जो फिर स्वतंत्र रूप से अन्य प्रकार के अणुओं के साथ मिलकर ओज़ोन बनाते हैं। ओज़ोन वायुमंडल में मात्र एक अल्प मात्रा में गैस है - हवा के प्रत्येक 10 मिलियन अणुओं में लगभग 3 अणु ओज़ोन के हो सकते हैं। ओज़ोन परत पृथ्वी पर जीवन के लिए एक ढाल के रूप में कार्य करती है। पराबैंगनी विकिरणों (यूवी) वाला प्रकाश जीवों की सुरक्षात्मक परतों, जैसे त्वचा को भेदकर पौधों और जानवरों के डीएनए अणुओं को नुकसान पहुंचा सकता है। पराबैंगनी विकिरणों के दो प्रमुख प्रकार हैं- यूवी बी (UV-B) और यूवी ए (UV A)।

यूवी बी (UV B) सनबर्न जैसी त्वचा सम्बंधी समस्याओं और बेसल सेल कार्सिनोमा और स्क्वैमस सेल कार्सिनोमा जैसे कैंसर का कारण है। जबकि यूवी ए (UV A) प्रकाश, यूवी बी (UV B) से भी अधिक हानिकारक है, यह अधिक गहराई तक प्रवेश करता है तथा घातक त्वचा कैंसर, मेलेनोमा और समय से पूर्व बुढ़ापा पैदा करता है। हमारी पृथ्वी की समतापमंडलीय वाली ओज़ोन परत, इन विनाशकारी पराबैंगनी विकिरणों के प्रकाश का लगभग 98 प्रतिशत अवशोषित कर लेती है।

जब से देशों ने मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के तहत कार्रवाई शुरू की है, ओज़ोन परत को नुकसान पहुंचाने वाले पदार्थों की वैश्विक खपत में लगभग 98% की कमी आई है। इसके परिणामस्वरूप, ओज़ोन परत को नुकसान पहुँचाने वाले सबसे आक्रामक पदार्थों की वायुमंडलीय सांद्रता कम हो रही है और ओज़ोन परत में सुधार के प्रथम लक्षण दिखने लगे हैं। हालांकि, अंटार्कटिक ओज़ोन छिद्र का आकार वर्ष 2000 में अपने सबसे बड़े विस्तार पर पहुंच गया था, जब इसका विस्तार 29.9 मिलियन वर्ग किमी हो गया था, वर्ष 2021 तक इसका क्षेत्रफल घटकर 24.8 मिलियन वर्ग किमी रह गया। 2018 की संयुक्त राष्ट्र रिपोर्ट में अनुमान लगाया गया है कि अंटार्कटिक ओज़ोन छिद्र धीरे-धीरे बंद हो जाएगा और 2060 तक समताप मंडल में ओज़ोन सांद्रता 1980 के स्तर पर वापस आ जाएगी। आर्कटिक के ऊपर, 2030 के मध्य तक ओज़ोन का स्तर 1980 के स्तर पर वापस आ जाने की उम्मीद है।

ओज़ोन परत की पुनर्प्राप्ति जारी रखने के लिए विश्व स्तर पर प्रयास किए जाने चाहिए। यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि ओज़ोन-क्षयकारी पदार्थों पर मौजूद प्रतिबंधों का उचित रूप से क्रियान्वयन हो तथा ओज़ोन-क्षयकारी पदार्थों के वैश्विक उपयोग में कमी जारी रहे। ओज़ोन परत को क्षति पहुँचाने वाले पदार्थों का पर्यावरण अनुकूल तरीके से निपटान किया जाना चाहिए तथा उन्हें जलवायु अनुकूल विकल्पों से प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए। विश्व ओज़ोन दिवस हमें स्मरण कराता है कि ओज़ोन परत धरती पर जीवन के लिए आवश्यक है और भविष्य की पीढ़ियों के लिए इसे बचाने के लिए हमें निरंतर प्रयास करना चाहिए। ❑

बोल्डर्स पेंगुइन

डॉ. [illegible]
[illegible]

अंकित के पिताजी की नियुक्ति दक्षिण अफ्रीका के केपटाउन में हुई थी। उस समय अंकित नौ वर्ष का था। वहाँ आकर वह थोड़ा निराश था क्योंकि उसके हमउम्र मित्र भारत में छूट गए थे। वैसे तो उसके पिताजी ने उसे दक्षिण अफ्रीका की जंगल सफारी और वहाँ की जैव-विविधता के बारे में पहले ही बहुत कुछ बता दिया था, ताकि वह नई जगह में दिलचस्पी ले सके। उन्हें रहने के लिए जो आवास मिला था, वह समुद्र-तट के समीप था। उसके घर से समुद्र की उफनती लहरें और क्षितिज तक फैला दृश्य साफ दिखाई देता था। उन दिनों अंकित के विद्यालय में छुट्टियाँ थीं।

उसके पिताजी को जब भी अवकाश मिलता, वे अंकित को केपटाउन की नई-नई जगहों पर घुमाने ले जाते। वे केप ऑफ गुड होप गए, जो दक्षिण अफ्रीका के दक्षिणी छोर पर स्थित है और अटलांटिक तथा हिन्द महासागरों के मिलन बिंदु के रूप में जाना जाता है। रास्ते में उन्होंने केपटाउन पॉइंट नेचर रिज़र्व में शुतुरमुर्ग देखे, जो उनके आसपास घूम रहे थे। बीच सड़क पर बबून बंदर बैठे थे और उनके बगल से गाड़ी को गुजारना पड़ता था। अंकित ने उनकी तस्वीरें लीं और उनके साथ सेल्फी भी ली थी।

वे वहाँ के सबसे बड़े आकर्षण 'किंग सफारी' भी गए, जहाँ उन्होंने हाथी, गैंडा, शेर, भैंस और तेंदुआ देखा। सामान्यतः तेंदुआ आसानी से नहीं दिखाई देता क्योंकि वह छिपकर रहता है, लेकिन वे भाग्यशाली थे कि उन्हें तेंदुआ भी दिख गया।

इन दिनों उन्होंने चैपमैन्स पीक से सूर्यास्त देखा। वहीं से उन्होंने दूरबीन से सैकड़ों सील को चट्टानों पर आराम करते देखा। अंकित की रुचि जीव-जंतुओं और पर्यावरण के प्रति और अधिक गहरी हो गई थी। जब भी उसे पढ़ाई के बाद समय मिलता, वह प्रकृति और जीवों से सम्बंधित चैनलों को देखना पसंद करता। इन दिनों वह विशेष रूप से पेंगुइनों के बारे में अधिक जानकारी इकट्ठा कर रहा था और अपनी पसंदीदा फिल्म 'हैप्पी फीट' बार-बार देखता रहता था।

एक दिन सुबह जब उसने अपनी खिड़की से बगीचे की ओर देखा, तो उसे झाड़ियों के पास पेंगुइनों का एक जोड़ा दिखाई दिया। उसे लगा कि शायद वह सपना देख रहा है! भला दक्षिण अफ्रीका में पेंगुइन कहाँ से आ सकते

हैं? ये तो अंटार्कटिका में पाए जाते हैं, जहाँ चारों ओर बर्फ-ही-बर्फ होती है। वह धीरे से बाहर गया और उनके पास जाकर उन्हें छुआ, तो एक पेंगुइन खुशी में अपने शरीर को हिलाने लगा। यह देखकर अंकित रोमांचित हो उठा और उसने इस पेंगुइन की उपस्थिति के बारे में किसी को न बताने का संकल्प ले लिया।

धीरे-धीरे अंकित और पेंगुइन अच्छे मित्र बन गए। कभी-कभी वह उन्हें मछली भी खिलाता। कुछ ही दिनों में उसने वहाँ दो अंडे देखे, जो सामान्य मुर्गी के अंडों से तीन गुना बड़े थे। अब अंकित और अधिक व्यस्त रहने लगा। उसका अधिकतम समय पेंगुइनों के साथ बीतता।

एक रविवार को उसके माता-पिता उसे टेबल माउंटेन घुमाने ले गए। वहाँ उन्होंने केबल कार का आनंद लिया। केबल कार से शहर का दृश्य अत्यंत मनोहारी था। इसके बाद वे साइमन्स टाउन पहुँचे, जहाँ एक प्रसिद्ध समुद्र-तट है, जिसे बोल्डर्स बीच के नाम से जाना जाता है। वहाँ का दृश्य देखकर अंकित की आँखें आश्चर्य से फैल गईं। वहाँ सैकड़ों पेंगुइन थे, बिल्कुल वैसे ही जैसे उसके बगीचे में रहते थे।

उसके पिताजी ने सूचना पट्ट पर लिखी एक जानकारी पढ़कर सुनाई— "अफ्रीकी पेंगुइन केवल दक्षिण अफ्रीका में पाए जाते हैं। इनका वजन 2 से 5 किलोग्राम तक होता है। ये समुद्र का खारा पानी पीते हैं। इनके सिर में विशेष ग्रंथियाँ होती हैं जो समुद्र के जल को शुद्ध कर देती हैं। इनका जीवनकाल लगभग 10 से 15 वर्षों तक होता है। ये समुद्र में 130 मीटर तक डुबकी लगा सकते हैं और 20 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से तैर सकते हैं। ये आजीवन एक ही जीवनसाथी के साथ रहते हैं। गधे जैसी आवाज निकालने के कारण इन्हें पहले 'जैकस पेंगुइन' कहा जाता था।"

पेंगुइनों से संबंधित और भी कई जानकारी वहाँ दी गई थी। अंकित यह सब पढ़कर आश्चर्यचकित था। वह अब वास्तविकता की दुनिया में पेंगुइनों से परिचित हो रहा था। पेंगुइन जोड़े बनाकर अपने घोंसलों में रह रहे थे। मौसम सुहावना था, हल्की ठंड थी और धूप खिली हुई थी। वहाँ पर्यटकों की अच्छी-खासी भीड़ थी। सभी उत्साहित थे। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि पेंगुइन भी पर्यटकों द्वारा देखे जाने को पसंद कर रहे थे। वे जोड़े बनाकर जिस अंदाज में चल रहे थे, वह दृश्य अत्यंत आकर्षक लग रहा था। पास में ही सीमांकित समुद्री तट भी था, जहाँ का पानी बहुत ठंडा था। फिर भी कुछ पर्यटक समुद्र में डुबकी लगाने का आनंद ले रहे थे।

अंकित ने पिताजी से कहा — "डैडी! हमारे बगीचे में भी एक जोड़ा पेंगुइन रह रहा है, लेकिन मैंने आपसे यह बात छुपाई, क्योंकि मुझे लग रहा था कि बर्फीले प्रदेश में रहने वाला यह जीव हमारे बगीचे में कैसे रह सकता है?"

इस पर उसके पिताजी हँसते हुए बोले — "हाँ अंकित! अधिकतर लोग यही सोचते हैं। देखो! यहाँ लिखा है कि 1980 के दशक में केपटाउन के पास पेंगुइनों ने दो कॉलोनियाँ बनाई थीं — एक साइमन्स टाउन के पास बोल्डर्स बीच पर और दूसरी बेट्टीज बे के स्टोनी पॉइंट में। इनकी एक और कॉलोनी नामीबिया में है। ये पेंगुइन अंटार्कटिका वाले पेंगुइनों से अलग होते हैं। सामान्यतः पेंगुइन दक्षिणी गोलार्ध में पाए जाते हैं जहाँ अधिकतम बर्फ होती है। केवल एक प्रजाति, गैलापागोस पेंगुइन, भूमध्य रेखा के उत्तर में उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में पाई जाती है। अफ्रीकन पेंगुइन गर्म जलवायु में रहने वाले समुद्री पक्षी हैं जिनकी ऊँचाई लगभग 24–28 इंच होती है। ये आकार में छोटे होते हैं।"

"इनका कद देखकर मैं भी चकित हो गया था डैडी! मुझे तो ये बौने पेंगुइन लग रहे थे। अब हमारे बगीचे

वाले पेंगुइन का क्या करें?" अंकित ने चिंता जताई।

"देखते हैं बेटा। किसी से सलाह लेनी होगी।" पिताजी ने कहा।

वहाँ पूछने पर उन्हें पता चला कि SANCCOB नाम की एक संस्था है, जो समुद्री पक्षियों के संरक्षण और उपचार का कार्य करती है। 2018 में उन्होंने एक अस्पताल भी बनाया है, जहाँ समुद्री पक्षियों का इलाज होता है। संस्था का उद्देश्य संकटग्रस्त अफ्रीकी पेंगुइनों को बचाना और लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करना है।

पिताजी ने जब SANCCOB से संपर्क किया तो वहाँ से जार्ज नामक एक व्यक्ति उनके घर आया। उसने पेंगुइनों के स्थान का निरीक्षण किया और कहा, "देखिए, ये पेंगुइन अब जंगली से शहरी बन गए हैं। इन्हें इंसानों के आसपास रहना अच्छा लगता है। आप इनका ध्यान रखें। जब इनके बच्चे अंडों से निकलकर बड़े हो जाएँगे, तो वे समुद्र की लम्बी यात्रा पर निकलेंगे। मजेदार बात यह है कि समुद्र में महीनों बिताने के बाद वे फिर अपने बनाए हुए घोंसले की जगह पर वापस आ जाएँगे।"

"क्या इन्हें इनसे डर नहीं लगता?" अंकित ने पूछा।

जार्ज मुस्कुराते हुए बोला, "कभी-कभी लगता है, लेकिन सामान्यतः नहीं। तभी तो उन्होंने शहरों के पास कॉलोनियाँ बनाई हैं। हालाँकि ये समुद्री जीवन के लिए पूरी तरह अनुकूल हैं, लेकिन प्रजनन के लिए प्रायः पानी से बाहर तक समुद्री तटों पर आते हैं।"

"जार्ज अंकल! इनके बारे में कुछ और जानकारी दीजिए।" अंकित ने उत्सुकता जताई।

"ये मासूम-से दिखने वाले जीव अब विलुप्ति के कगार पर हैं। 1900 में दुनिया में इनके 15 लाख से अधिक जोड़े थे। 1956 में यह संख्या घटकर 1,55,000 रह गई और आज केवल 10,000 से भी कम जोड़े बचे हैं। बोल्डर्स बीच पर इनकी संख्या लगभग 3,000 है।"

"इतनी तेजी से इनकी संख्या क्यों घट रही है?" अंकित ने चिंतित होकर पूछा।

"इसके कई कारण हैं," जार्ज ने समझाया, "समुद्र में तेल रिसाव होने से इनके शरीर में तेल लग जाता है जिससे इनके पंख काम नहीं करते और ये तैर नहीं पाते। वर्ष 2000 में केपटाउन तट के पास MV Treasure नामक जहाज डूबा था, जिससे 20,000 से अधिक पेंगुइन प्रभावित हुए थे। दूसरा कारण इनके लिए भोजन की कमी है। सार्डिन और एन्कोवी जैसी मछलियाँ इनकी पसंदीदा होती हैं, लेकिन अत्यधिक मछली पकड़ने के कारण इनकी उपलब्धता 60-70% तक घट गई है। साथ ही आवारा कुत्ते-बिल्लियाँ और शिकारी जीव जैसे सील और शार्क इनके अंडों व बच्चों को नुकसान पहुँचाते हैं।"

"यह तो मुझे बिल्कुल पता नहीं था। क्या लोग नहीं समझते कि हर जीव जरूरी होता है?" अंकित ने कहा।

जॉन बोले, "बिलकुल। पेंगुइन समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र को संतुलित रखते हैं। ये छोटी मछलियाँ खाकर खाद्य शृंखला बनाए रखते हैं। इनके घोंसले मिट्टी के कटाव को रोकते हैं। लेकिन दुर्भाग्यवश, पहले इनके अंडों को भोजन के रूप में खाया जाता था। 1970 के दशक तक लोग इन्हें खाने व बेचने के लिए एकत्र करते थे। इनके मल (गुआनो) का उपयोग उर्वरक के रूप में होता था जिससे इनके घोंसले नष्ट हो जाते थे।"

"तब तो हमें इन्हें बचाने की कोशिश करनी चाहिए।"

"बिलकुल। इनके संरक्षण से लोग जैव विविधता के महत्त्व को समझ सकते हैं। स्कूल, शोध संस्थान और पर्यावरण संगठन इसके जरिए जागरूकता फैला सकते हैं। बोल्डर्स बीच पर पेंगुइनों को देखने हजारों पर्यटक आते हैं, जिससे इको-टूरिज्म को भी बढ़ावा मिलता है।"

"आज से मैं यह प्रयास करूँगा कि मेरे कारण किसी भी जीव को हानि न हो।" अंकित ने उत्साहपूर्वक कहा।

"जानते हो अंकित!" इस बार उसके पिताजी ने कहा, "प्रतिवर्ष 27 सितम्बर को सम्पूर्ण विश्व में 'विश्व पर्यटन दिवस' मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य पर्यटन के माध्यम से पर्यावरण की रक्षा करना तथा प्राकृतिक संसाधनों के सतत एवं संतुलित उपयोग को प्रोत्साहित करना है।"

"तो अब हमें अनुमति दीजिए। उम्मीद है कि तुम इन पेंगुइनों का ध्यान रखोगे। जल्द ही फिर मिलेंगे।" यह कहकर जॉन वहाँ से चला गया।

समय बीतता गया। ये पेंगुइन अंकित के जीवन और खेल का हिस्सा बन गए। अब उसे पर्यटन बहुत अच्छा लगने लगा था। वह पढ़ाई और दिनचर्या में भी अधिक व्यवस्थित हो गया।

एक दिन अचानक उसने देखा कि उसके बगीचे में अब पेंगुइन नहीं हैं। वह उदास हो गया। उसकी उदासी दूर करने के लिए उसके पिताजी उसे फिर से बोल्डर्स बीच ले गए, जहाँ सैकड़ों पेंगुइन अपने छोटे बच्चों के साथ अब भी मौजूद थे। वहीं उनका संसार था। तभी एक पेंगुइन समुद्र में डुबकी लगाकर अंकित के पास आया, थोड़ा नाचा और फिर नटों की तरह ऐंठते हुए अपने झुंड में लौट गया। अंकित की आँखें भर आईं, पर दूसरे ही पल उसका चेहरा इस उम्मीद में सूर्य की सुनहरी रोशनी में दमक उठा कि एक दिन पेंगुइन उसके बगीचे में फिर से आएँगे।

नए-नए दोस्त

कल्पना सिंह
लेखिका

प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित और कल्पना सिंह द्वारा लिखित उपन्यास पिनूरी की अगली कड़ी

सुबह का सूरज उगा। सभी माझी और नाविक डेक पर इधर-उधर घूमने लगे। सुबह कल के तूफान से जहाज पर क्या-क्या नुकसान हुआ, वे इस बात की जाँच कर रहे थे।

सिरीन भी डेक पर आई। वह काफी उदास थी। एक बढ़िया खिलौना मतलब एक दुर्लभ मछली उसके हाथों में आकर चली गई थी। उदास न होती, तो क्या करती?

पिनूरी ने उसे देखकर सीटी बजाई।

बच्ची की आँखें आश्चर्य से फैल गईं। अपनी खुशी पर काबू नहीं कर पाई, तो खिलखिलाकर हँस पड़ी। सोच भी नहीं सकती थी कि अपनी प्रिय सतरंगी मछली को वह एक बार फिर देख पाएगी।

"वह मेरी है, मेरी ही है।" अपनी खुशी को सम्भालते हुए सिरीन स्वयं से बोली।

पिनूरी ने दोबारा सीटी बजाई।

"तुम अभी भी यहीं हो? अपने घर को क्यों नहीं गई? देखो मित्र, यह सब क्या चल रहा है? मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा है।" कहकर सिरीन शरारत से मुस्कुराई। वह समझ चुकी थी कि सतरंगी मछली जहाज के साथ ही रहना चाहती है।

किंतु पिनूरी मन में कुछ समझ नहीं पा रहा था। घर से इतनी दूर आकर अब इस जहाज को छोड़कर कहाँ जाए? दुष्ट बच्ची यह बात नहीं समझ रही है कि सुबह हो गई है और पिनूरी को भूख लगी है।

और, जैसे ही बच्ची को बात समझ में आई वह भागती हुई अपने कमरे में गई। वह खुशी से पागल हो रही थी और गुनगुना रही थी, "वह मेरी है, वह अद्भुत मित्र मेरी है। चाहे कुछ भी कहानी सुनाएँ, वह मेरी ही है।"

"ठीक है, तो उसे जहाज पर नहीं रखूँगी," उसने मन में तय किया, "पर मैं उसे खाना देकर अपने साथ कैलिफोर्निया तक ले जा सकती हूँ।"

पानी में ढेर सारा खाना डाल सिरीन वायलिन बजाने लगी। साथ-साथ वह गुनगुना भी रही थी, "माई क्यूट फिश, माई डियर क्यूट फिश। तुम मेरी हो, हाँ तुम मेरी हो।"

पेट भर के खाना खाया, तो पिंटूली भी तनन्... तनन्... गुनगुना दिया। और कर भी क्या सकता था सिरीन की खुशी के लिए?

जहाज की गति तेज हो रही थी और पिंटूली पीछे छूट रहा था। सिरीन इस बात को समझ गई। वह जहाज के कप्तान की बेटी थी। उसका ज्यादातर समय समुद्र और जहाज पर ही बीतता था। उसने एक और भी ज्यादा मोटी रस्सी तलाश की और उसी बाल्टी को इस ज्यादा मजबूत रस्सी के सहारे नीचे पानी में लटका दिया। बाल्टी के अंदर तीन-चार छेद करना न भूली। बाल्टी पानी के अंदर थोड़ी सी डूब गई। सिरीन ने रस्सी को ऊपर की तरफ से डेक पर लगे कुंडे से बाँध दिया। जहाज के साथ-साथ बाल्टी भी आगे बढ़ रही थी। उसके अंदर छेदों की वजह से उसमें इतना पानी नहीं भर रहा था कि वह टूटकर अलग हो जाती।

"तुम उस बाल्टी में बैठ सकती हो, इससे तुमको तैरने की मेहनत नहीं करनी पड़ेगी और तुम आराम से मेरे साथ-साथ कैलिफोर्निया पहुँच जाओगी।"

पिंटूली कैलिफोर्निया नहीं जाना चाहता था। उसने बच्ची की बात सुनी भी नहीं। उसने सोचा यदि वह जहाज के साथ चलता रहा, तो कम से कम खाने का प्रबंध होता रहेगा।

साथ में उस बच्ची ने उसी समय फिर से खाने का कुछ सामान पानी में डाला, जिसे पिंटूली ने अपने मुँह में भर लिया।

"मैं ब्रेकफास्ट करने जा रही हूँ।" कहकर वह बच्ची अपने केबिन में चली गई।

बच्ची द्वारा फेंके गए भोजन को खाने के लिए, कई छोटी-छोटी मछलियाँ उसके पास आ गई थीं।

"तुम कौन हो?" पिंटूली ने उनसे पूछा।

"हम घुमंतू मछली हैं। सागर में इधर से उधर घूमते रहते हैं।"

"क्या तुम लपकले टापू का पता जानती हो?"

"लपकला टापू! वह कहाँ है?" घुमंतू ने पूछा।

"मुझे नहीं पता। इसीलिए तो तुमसे पूछ रहा हूँ। लपकले टापू पर मेरा घर है, जहाँ मेरे माता-पिता, भाई-बहन रहते हैं।"

"हमें अफसोस है, हम ऐसे किसी टापू का पता नहीं जानते। तुम हमारे टापू पर चलना चाहो, तो हम तुम्हें अपने साथ ले जा सकते हैं।" एक मछली ने दयालुता से कहा।

"नहीं, धन्यवाद, मुझे नहीं जाना। पिंटूली ने भी शालीनता से मना कर दिया।"

घुमंतू अपने रास्ते चली गई। पिंटूली बाल्टी से निकालकर जहाज के संग तैरने लगा। □

पोषक आहार पोषण का आधार

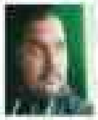

मुकेश कुमार ऋषि वर्मा
स्वतंत्र लेखक

हम हिन्दी के उपासक हैं,
हिन्दी देवी की मूरत।
हिन्दी भारत की सूरत।।

हिन्दी में संस्कृति की धारा।
हिन्दी मृदुल, जन-जन का नारा।।

हम हिन्दी के उपासक हैं,
इसमें विविध लोकभाषाओं की छवि।
नित सृजन करते लाखों लेखक-कवि।।

हिन्दी भारत का जीवन।
हिन्दी भारत का तन-मन।।

हम हिन्दी के उपासक हैं,
हिन्दी घर-घर की भाषा।
हिन्दी स्वर्णिम कल की आशा।।

लिखें, पढ़ें और बोलें हिन्दी।
तो हर हाल में समृद्ध हो हिन्दी।।

हम हिन्दी के उपासक हैं,
हिन्दी साधना, नैतिक दायित्व हमारा।
हिन्दी के प्रति सच्चा हो प्यार हमारा।।

बाल भारती की सदस्यता के लिए कूपन

☐ ₹260 (डाक सुविधा के बिना)

☐ ₹364 (डाक सुविधा के साथ)

(उचित बॉक्स का निशान लगाएं)

मैं बाल भारती का/की सदस्य बनना चाहता/चाहती हूं। [illegible]

[illegible] ______ दिनांक ______ भेज रहा/रही हूं।

- सदस्यता के लिए निर्धारित शुल्क [illegible]
- [illegible]

नाम ______________________

पता ______________________

____

____

मोबाइल नं. ______________________

ई-मेल आईडी ______________________

वर्ग : विद्यार्थी/शिक्षक/संस्था/अन्य

____

- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]

[illegible]			
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]

डायबिटीक बार्बी

खिलौनों की दुकान में एक नई बार्बी आई है, लेकिन यह एक गुड़िया से कहीं अधिक है। नई बार्बी अपने हाथ पर एक निरंतर डायबिटीज मॉनिटर पहनती है, जो रक्त शर्करा के स्तर को ट्रैक करने वाला एक उपकरण है- जबकि उसने एक फोन पकड़ रखा है जो एक सहायक ऐप को प्रदर्शित करता है। उसके ऊपर पर एक इंसुलिन पम्प भी जुड़ा हुआ है। और गुड़िया एक नीली बैग लिए हुए है जो अन्य आवश्यक सामग्रियों या नाश्ते को ले जाने के लिए इस्तेमाल की जा सकती है। बार्बी की पोशाक भी नीली है- जिसमें एक नीला टॉप और स्कर्ट सेट पर पोल्का डॉट्स हैं।

भारत में लगभग 97,700 बच्चे जो 15 वर्ष से कम उम्र के हैं, को भारतीय जर्नल ऑफ एंडोक्राइनोलॉजी एंड मेटाबॉलिज्म में प्रकाशित शोध के अनुसार टाइप 1 डायबिटीज होने का अनुमान है। यह बार्बी बच्चों को डायबिटीज के प्रति जागरूकता करती है।

टाइप 1 डायबिटीज अनुसंधान और वकालत संगठन जिसे पहले जुवेनाइल डायबिटीज रिसर्च फाउंडेशन, या जेडीआरएफ के नाम जाना जाता था- ने यह सुनिश्चित किया कि वास्तव में समाज को जागरूक होने की जरूरत है। इसमें ऐसे एक्सेसरीज शामिल हैं जो चिकित्सा उपकरणों को दर्शाती हैं जिनकी टाइप 1 डायबिटीज वाले लोगों को आवश्यकता हो सकती है। यह बच्चों में डायबिटीज की जागरूकता और खतरे से आगाह करता है। यह बार्बी को प्रोत्साहित करती है कि उनकी पसंदीदा गुड़िया अपनी बीमारी को किस प्रकार सम्भालती है। आज के समय में इस बीमारी से जुड़े बच्चे और परिवार के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है। बार्बी निर्माता का कहना है कि बच्चे अपनी कल्पनाओं में कहानियों और पसंदीदा गुड़ियों में खुद को देखकर बहुत कुछ सीखें।

आरएनआई सं. 60617
डाक पंजीकरण सं. / Postal Regd. No.
लाइसेंस पोस्ट सं./ Magazine Post No.
बिना पूर्व भुगतान के डाक आर.एम.एस. दिल्ली
में पोस्ट करने के लिए लाइसेंस यू (डीएन)-51/2024-26
प्रकाशन तिथि : 01 सितम्बर, 2025

प्रकाशन विभाग
सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय

PRGI No. 69657
DL (S) 05/3214/2024-26
DL (DS)-41/MP/2025-26-27
Licensed to post without
pre-payment at RMS Delhi
U (DN) - 51/2024-26

ISSN-0971-8443

[illegible], उ.प्र.

[illegible], हरियाणा

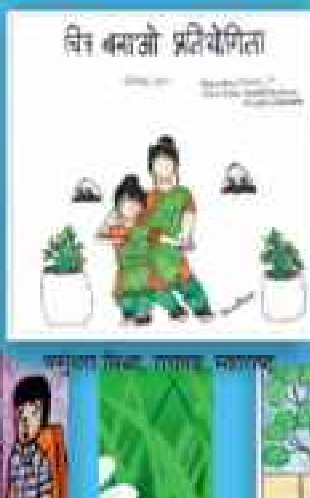

[illegible], महाराष्ट्र

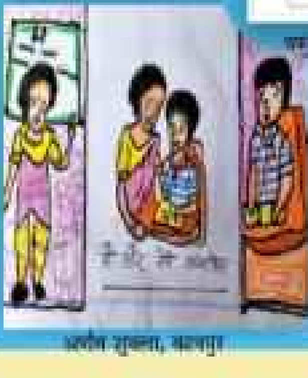

[illegible], [illegible]पुर

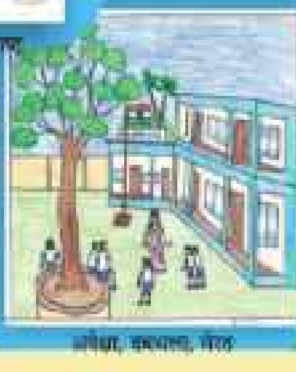

[illegible], केरल

भूपेन्द्र कैंथोला, प्रधान महानिदेशक, द्वारा प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार के लिए सूचना भवन, लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 से प्रकाशित और मुद्रक [illegible] द्वारा [illegible] प्रेस, डी-[illegible], ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज-1, [illegible], नई दिल्ली-110020 में मुद्रित।
सम्पादक : [illegible]